www.emanjari.com

RNI Title Code: BIHBIL02442

मंजरी

स्त्री के मन की

अंक 24

वर्ष 2023

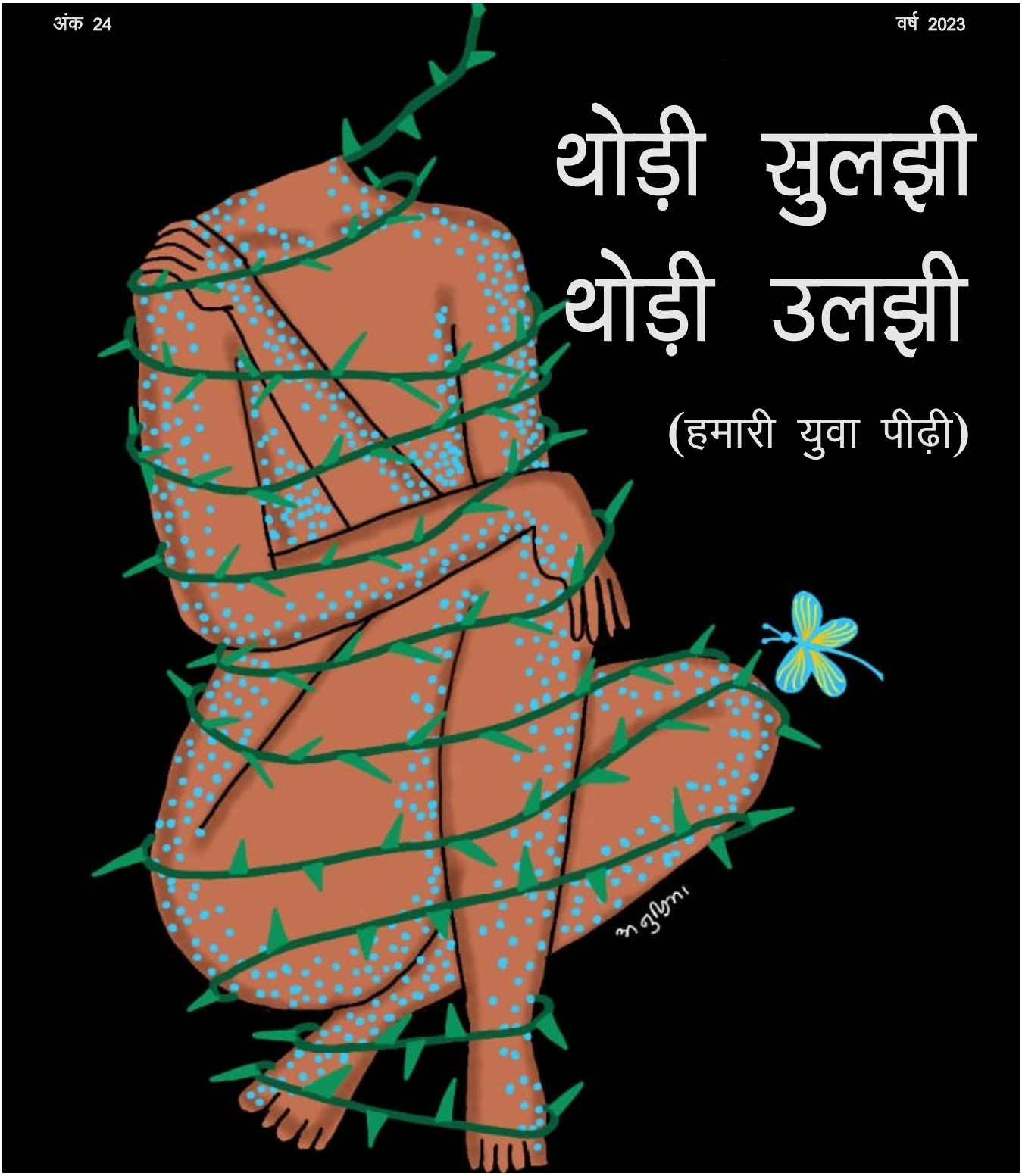

थोड़ी सुलझी थोड़ी उलझी

(हमारी युवा पीढ़ी)

मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबन्धन विभाग तथा सूचना एवं जन-संपर्क विभाग, बिहार द्वारा जनहित में जारी।

मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबन्धन विभाग तथा सूचना एवं जन-संपर्क विभाग, बिहार द्वारा जनहित में जारी।

संकल्पना

इक्विटी फाउंडेशन लंबे अरसे से एक वेब पत्रिका शुरू करने के बारे में सोच रहा था। मकसद था महिला और समाज के मुद्दों को शिद्दत से उठाना। जब हमने चीजों को एक साथ कर उसे पत्रिका के रूप में सजाने के बारे में सोचना शुरू किया तो इस क्रम में कई लोगों से जुड़े। हमने महिलाओं को पत्रिका से जोड़ने की कोशिश की। हम दोस्तों से मिले और परिचितों से बात की। महिलाओं के सामाजिक समूहों और शिक्षाविदों के एक साथ जुड़ने के बाद जो स्वरूप सामने आया वह है 'मंजरी'।

मंजरी यानी कोंपल। शाखों में फूटने वाली नन्ही पत्तियां। नई शाखों का सृजन करने वाले इन कोंपल को कुम्हलाने से बचाना जरूरी है नहीं तो पूरे पेड़ का विस्तार कुंद हो जाएगा। ठीक उसी तरह स्त्री के मन की मंजरी को सहेजने की जरूरत है वरना पेड़रूपी समाज विकृति का शिकार हो जाएगा। हमारा प्रयास इसी मंजरी को पुष्पित पल्लिवत करने का है जो औरत की सोच और उसकी को. शिश को सही दिशा प्रदान कर सके।

मंजरी के सृजन के दौरान पहले तो 10–30 लोगों का एक ढीला–ढाला समूह बना। विचार आते गए। अलग–अलग विषयों और मुद्दों पर। समूह में कुछ अनमनी महिलाएं थीं तो कुछ सहानुभूति दिखाने वाले पुरुष भी। कुछ महज एक या दो बैठकों में शामिल हुए तो कुछ जब मन में आया, आ गए। बाकी बचे लोगों ने 'मंजरी' को मुकाम पर ले जाने का दायित्व अपने कंधों पर लिया। 'मंजरी' का लक्ष्य एक ऐसा मंच उपलब्ध कराना है जहां बुद्धिजीवियों को उनकी खुराक मिले तो शोधकर्ताओं की जिज्ञासा शांत हो। क्रियान्वयन के लिए बहस और तर्क के रास्ते हमेशा खुले रहें। इक्विटी की लगातार कोशिश रही है शोध और क्रियान्वयन के बीच की दूरी को पाटना। ऐसे में हमारा मानना है कि शोध तब तक अप्रासंगिक हैं जब तक कि इनका लोगों की जिंदगी और उनके क्रियाकलापों से जुड़ाव न हो। ठीक इसी तरह सिविल सोसायटी के तौर पर अगर हम जमीनी सच्चाई से वाकिफ न रहें, जिनमें सामाजिक प्रक्रियाएं और ऐतिहासिक मूल्यों का समावेश है और जो समाज में रहने वाले लोगों के मूल्यों और उनके चरित्र को आकार देते हैं, तो किसी भी कोशिश का कोई मतलब नहीं रहता है।

'मंजरी' एक उद्यम है, क्रियाशीलता को शोध आधारित रचना और आलोचना के नजरिये से देखने का जो महिला अधिकारों के साथ–साथ जीवन के हर पलू को इंगित करे। नियमित गैर सरकारी संगठनों और अकादमिक तंत्रों से इतर 'मंजरी' राजनीति और आदर्शवादिता को लांघ कर सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक सुधारों को सांस्कृतिक संवेदनशीलता के आधार पर मापती है। 'मंजरी' उन तमाम कार्यकर्ताओं, विद्वानों, शिक्षाविदों, पत्रकारों, प्रोफेशनल, गृहणियों और नीति निर्धारकों द्वारा पढ़ी जाएगी जो किसी समस्या के लिए समाधान आधारित नवीन दृष्टि और पृथक सोच रखते हैं। यह पत्रिका अपने पाठकों को जेंडर आधारित मुद्दों को जैविक और सामा. जिक आधार पर परखने की छूट देती है। व्यक्ति और समाज की विचारधारा में जेंडर को लेकर क्या बदलाव आये और उनका क्या असर हुआ, इसकी पूरी पड़ताल करने की आजादी लोगों को होगी। यह पत्रिका एक कोशिश है पड़ताल की प्रवृत्ति को जगाने की ताकि लोग तेजी से बदलते और विविधताओं से भरे समाज में पूरी क्षमता से काम करने को तैयार हो सकें जिसमें महिलाओं के प्रति भेदभाव भी एक अहम मुद्दा होगा। महिला समानता और अधिकारों पर 'मंजरी' के दखल से उन बेशुमार कार्यकर्ताओं, संगठनों और विद्वजनों को फायदा होगा जो दहेज, यौन प्रताड़ना, महिला अधिकारों, महिला आरक्षण, आर्थिक सुधार और अल्पसंख्यक समुदायों के निजी कानूनों में रुचि रखते हैं।

पत्रिका का मकसद

इक्विटी फांडेशन खुद को सुविधाविहीन महिलाओं को उनकी पूर्ण क्षमता से अवगत कराने और समाज में उनके क्रियाशील प्रभुत्व को स्थापित कराने की दिशा में वाहक के तौर पर देखता है। देश के विकास के हर क्षेत्र में महिलाओं की समान भागीदारी की राष्ट्रीय नीति तभी सफल हो पाएगी जब महिलाओं की भूमिका और उनके योगदान को कमतर आंकने वाले संस्थान और विचारों को हतोत्साति किया जाये या उनका पूरी तरह सफाया किया जाय। 'मंजरी' की परिकल्पना समाज और अर्थव्यवस्था में महिलाओं के जीवन और उनके स्तर को प्रभावित करने वाले विचारों के निर्माण, विकास और उनके प्रसार के लिए की गई है। बारहवीं पंचवर्षीय योजना के परिप्रेक्ष्य में समानता संबंधी मुद्दों को इस प्रकार समग्र रूप में देखने की जरूरत है जो असमानता की अंतरवर्गीय विशेषताओं को जाहिर कर सके। समानता पर आधारित 'मंजरी' के ज्यादातर आलेख भिन्न–भिन्न समूहों को निशाने पर रखते हैं जो कुछ हद तक बेहद जरूरी भी है। इसलिए यह पत्रिका कुछ समूहों के कुछ विशेषाधिकारों के पूर्ण निष्कासन और अंतरवर्गीय दृष्टिकोणों के स्थापन के बीच नियंत्रक की भूमिका में होगी जो नीति निर्धारण और योजनाओं के क्रियान्वयन के दौरान असमानता को उसके तमाम स्वरूपों के साथ सामने रखने में कारगर होगी। ऐसे में इसका मकसद लैंगिक भेदभाव के निर्मूलन की ओर वह विवेचनात्मक चर्चा छेड़ने का है जो वर्तमान परिदृश्य में शोधों का एजेंडा तय कर सके और एक बेहतर वैकल्पिक प्रस्ताव का सृजन कर सके। अब तक यह संगठन कार्यशाला, कांफ्रेंस और अन्य सार्वजनिक आयोजनों के जरिये अपनी प्रतिबद्धता दर्शाता रहा है लेकिन अब इस पत्रिका के माध्यम से यह क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय अतिथि लेखकों, जिनमें विद्वजन, अधिवक्ता, सरकार, पत्रकार, फिल्म निर्माता, कवि और सामाजिक कार्यकर्ता हैं, को जोड़ने की कोशिश कर रहा है।

हमारी बात

संरक्षण

पद्मश्री डा. उषा किरण खान
प्रख्यात लेखिका एवं साहित्यकार

मणिकांत ठाकुर
प्रख्यात पत्रकार

प्रो. भारती एस. कुमार
प्रोफेसर (सेवा.) इतिहास, पटना विवि

डा. रेणु रंजन
प्रोफेसर (सेवा.), समाज शास्त्र
पटना विवि

परामर्श

डा. शरद कुमारी
सचिव, बिहार महिला समाज

अंजिता सिन्हा
पत्रकार

डा. मधुरिमा राज
स्वतंत्र लेखिका एवं शोधकर्ता

सुजाता गुप्ता
लेखिका, कवयित्री एवं अनुवादक

संपादकीय

"युग के युवा, मत देख दाएँ, और बाएँ, और पीछे,
झाँक मत बगलें, न अपनी आँख कर नीचे,
अगर कुछ देखना है, देख अपने वे वृषभ कंधे
जिन्हें देता निमंत्रण, सामने तेरे पड़ा
युग का जुआ, युग के युवा!"
—हरिवंश राय बच्चन

इसमें कोई दो राय नहीं है कि आज का वर्तमान कल का भविष्य तय करेगा, मसलन जिस सोच और विचारधारा को लेकर हम यहाँ से आगे बढ़ेंगे वही विचारधारा कल देश, काल और समाज को प्रभावित करेगी। आज आप तटस्थ होकर गहनता से अध्ययन कीजिए, तो सोशल मीडिया से लेकर विश्वविद्यालयों तक आपको युवाओं का झुण्ड सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा करता नजर आयेगा। आपको एकदम से बदलाव दिखाई देगा। युवा आपको गंभीर चिन्तक दिखाई देगा, किन्तु इसके बाद का युवा आपको कुछ और दिखाई देगा। यानि किताबें पढ़ो, नई—नई बातें सीखो, लेकिन घर और समाज में घुसने से पहले उन्हें छोड़ आओ।

बीस की उम्र कब तीस की हो गई यह पता ही न चला और चलता भी कैसे, इन्हीं दस सालों में तो जिंदगी का हर मजा ले लेने की लूट होती है। पर इस मजे को लेने वाले युवा दो प्रकार के होते हैं— एक तो मजे के साथ—साथ आगे के जीवन को आर्थिक, सामाजिक रूप से स्थिर बनाने के लिए मौके की तलाश और उसके लिए मेहनत जारी रखते हैं और दूसरे वो होते हैं जो पूरी तरह से जिंदगी के मजे ले लेने के लिए अपने आप को समर्पित कर देते हैं, पर इसका अहसास उन्हें तीस वर्ष की अवस्था में आने पर होता है, जब उन्हें लगता है कि कहीं ना कहीं करियर बनाने की दौड़ में वो पीछे छूटते जा रहे हैं। तब वे सोचने लगते हैं कि अब हमें कुछ भी करना है और बस पैसा कमाना है और यही सोच हमें और मानसिक उलझन में डाल देती है। ऊर्जावान, सचेतन और आत्मविश्वास से लबरेज हमारी युवा पीढ़ी कहीं किसी छोर पर अपनी जिम्मेदारियों से मुंह चुराती भी दिख रही है। पारंपरिक और गैर पारंपरिक शिक्षा से लैस, पूरी तैयारियों के साथ यौवन की दहलीज तक पहुंच रहे हमारे नौजवानों के कंधे मजबूत हैं, लेकिन नजरें झुकी हैं। अपने लक्ष्यों को तलाशने की बजाय वे किसी और दिशा में भटक रहे हैं। हालांकि इनके बीच ही एक ऐसे युवा वर्ग का उदय हो रहा है जो हमारे समाज, अर्थव्यवस्था, धर्म और राजनीति को एक बिल्कुल नया और अनोखा आकार दे रहा है। 'मंजरी : स्त्री के मन की' का अगला अंक आज की इसी पीढ़ी को केन्द्र में रखता है जो थोड़ी सुलझी तो थोड़ी उलझी भी है।

Nsrivastava

नीना श्रीवास्तव

मुख्य संपादक

नीना श्रीवास्तव

संपादक

दीपिका झा

शोध

नीना श्रीवास्तव
दीपिका झा

आवरण चित्र

वरिष्ठ अतिथि कलाकार
अनु प्रिया

लोगो डिजाइन

दीया भारद्वाज

प्रबंधन/व्यवस्था

राहुल कुमार

प्रकाशन

इक्विटी फाउंडेशन

संपर्क

इक्विटी फाउंडेशन
123 ए, पाटलीपुत्र कॉलोनी
पटना, 13
फोन : 0612.2270171

ई–मेल
equityasia@gmail.com
वेबसाइट
www.emanjari.com

अनुक्रमणिका

संकल्पना .....

हमारी बात : संपादकीय .....

थीम पेपर: स्मार्ट फोन छोड़ दें, यह बर्बाद कर देगा..... 1

उम्मीदों से भरे आज के युवा 3

वेप या ई सिगरेट का बढ़ रहा खतरा..... 6

लक्ष्य से भटकी 4जी पीढ़ी..... 8

AI और युवा पीढ़ी में हाई–टेक रिश्ता..... 11

चांद के पार चलीं बेटियां..... 13

एलजीबीटीक्यू समुदाय के प्रेम को स्वीकृति नहीं..... 15

लिव इन संबंध: कितनी सुरक्षित हैं महिलाएं 18

सपनों का बोझ नहीं ढो पा रही नई पीढ़ी..... 20

देखते ही देखते जवान मां–बाप बूढ़े हो जाते हैं..... 23

बाजारवाद से बचना होगा युवाओं को..... 24

स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं..... 25

देश सेवा का सशक्त माध्यम है राजनीति..... 26

गरीब बच्चों में आत्मविश्वास भर रहे शरद..... 27

भटके युवाओं को राह दिखातीं अनुनीता..... 29

गिर कर उठना जानती हैं ये युवा पत्रकार..... 30

फेल होने से जिंदगी का सफर नहीं रुकता..... 32

अनु प्रिया (कलाकार/लेखिका)

सुपौल बिहार में जन्मीं अनु प्रिया जी के साठ से अधिक किताबों के आवरण एवं पत्र–पत्रिकाओं में रेखाचित्र प्रकाशित हो चुके हैं। साहित्य अकादमी, राजकमल प्रकाशन, वाणी प्रकाशन, अल्टरनोट प्रकाशन, अगोर प्रकाशन, प्रकाशन विभाग आदि से किताबों के आवरण पर निरंतर इनके द्वारा बनाये गए चित्र का प्रकाशन होता रहता है।

थीम पेपर

चौथी पीढ़ी : भारत के युवाओं के लिए खुला पत्र

स्मार्टफोन छोड़ दें, यह बर्बाद कर देगा

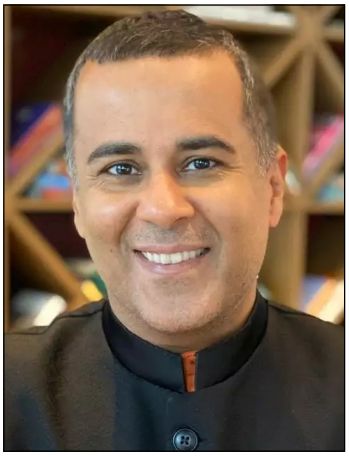

चेतन भगत

(एक बेस्टसेलिंग लेखक और एक लोकप्रिय समाचार पत्र स्तंभकार हैं।)

प्रिय मित्रों,

मुझे नहीं पता कि बड़े अखबार में छपने के बावजूद यह पत्र आप तक पहुंचेगा या नहीं। आपमें से बहुत से लोग जो अपने फोन में इतने व्यस्त हैं, वीडियो देख रहे हैं, वीडियो गेम खेल रहे हैं, अपने दोस्तों के साथ चैट कर रहे हैं, सोशल मीडिया पर टिप्पणी कर रहे हैं, या सिर्फ खूबसूरत मशहूर हस्तियों के फीड को स्क्रॉल कर रहे हैं, एक लेख पढ़ना आपकी प्राथमिकता सूची में बहुत नीचे आता है।

हालाँकि, यदि आपको कभी ऐसा मौका मिले तो कृपया इसे पूरा पढ़ें। यह महत्वपूर्ण है और यह आपके जीवन के बारे में है। आप अपना जीवन अपने फोन पर बर्बाद कर रहे हैं। हां, आप भारत के इतिहास की पहली युवा पीढ़ी हैं जिसके पास स्मार्टफोन और सस्ते डेटा तक पहुंच है, और आप हर दिन इस पर घंटों खर्च कर रहे हैं।

अपना स्क्रीन टाइम जांचें, जो अक्सर युवाओं के लिए प्रतिदिन औसतन 5–7 घंटे होता है। सेवानिवृत्त या स्थापित लोग अपने उपकरणों पर इतने घंटे बिता सकते हैं। एक युवा व्यक्ति, जिसे अपना जीवन बनाना है, वह ऐसा नहीं कर सकता।

पांच घंटे आपके सबसे उत्पादक घंटों का एक–तिहाई या आपके जीवन का एक–तिहाई हिस्सा है। सिगरेट या अन्य नशीले पदार्थों की तरह, यह फोन की लत आपके जीवन का एक हिस्सा खा रही है। यह आपके करियर की संभावनाओं को नुकसान पहुंचा रहा है और आपके दिमाग को खराब कर रहा है। यदि ऐसा ही रहा, तो आपकी पूरी पीढ़ी 4Gotten पीढ़ी बन जाएगी, एक पूरी पीढ़ी 4G की आदी, अपने जीवन में लक्ष्यहीन और राष्ट्र के बारे में अनभिज्ञ।

इस फोन की लत के ये शीर्ष तीन नकारात्मक प्रभाव हैं।

नंबर एक, निस्संदेह, समय की पूर्ण बर्बादी है, जिसका उपयोग जीवन में अधिक उत्पादक चीजों पर किया जा सकता है। अपने फोन से प्रतिदिन तीन घंटे बचाने और इसे किसी भी चीज पर खर्च करने की कल्पना करें– फिटनेस, कोई कौशल सीखना, अधिक अध्ययन करना, नौकरी की अधिक गहनता से खोज करना, नया व्यवसाय खोलना। सोचिए अगर आपने लगातार ऐसा किया तो यह आपको कहां ले जाएगा।

दो, नासमझी भरी चीजें देखने से आपका संज्ञानात्मक मस्तिष्क सुस्त हो जाता है। हमारे मस्तिष्क के दो क्षेत्र हैं– संज्ञानात्मक और भावनात्मक। एक अच्छा दिमाग वह है जहां दोनों अच्छे से काम करते हैं। जब आप कबाड़ देखते हैं, तो संज्ञानात्मक मस्तिष्क विघटित हो जाता है और कम उपयोग होता है। जल्द ही आपमें सोचने, तर्क करने या किसी बात पर तार्किक ढंग से बहस करने की क्षमता का अभाव हो जाता है। अब आप अलग–अलग दृष्टिकोण नहीं देख सकते, कई परिदृश्यों पर कार्रवाई नहीं कर सकते, अच्छे और बुरे का मूल्यांकन नहीं कर सकते या सही निर्णय नहीं ले सकते।

जब आपका संज्ञानात्मक मस्तिष्क सुन्न हो जाता है तो आप अकेले अपने

थीम पेपर

भावनात्मक मस्तिष्क से काम करते हैं। सोशल मीडिया पर लगातार गुस्सा, ध्रुवीकरण, मशहूर हस्तियों या राजनेताओं के प्रति तीव्र प्रशंसा और तीव्र नफरत, कुछ चिल्लाने वाले टीवी एंकरों की लोकप्रियता जैसी चीजें दिखाई देती रहती हैं, ये सभी एक ऐसी पीढ़ी की ओर इशारा करते हैं जहां भावनात्मक मस्तिष्क नियंत्रण में है, और तर्क करने वाला दिमाग काम नहीं कर रहा है।

जो लोग केवल भावनात्मक दिमाग से काम करते हैं वे जीवन में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। एकमात्र रास्ता है– अपने मस्तिष्क को सुन्न करना बंद करें और अपने दिमाग को अधिक उत्पादक चीजों में लगाएं।

स्क्रीन पर लगातार तीन घंटे आपकी प्रेरणा और ऊर्जा को खत्म कर देते हैं। जीवन में सफलता लक्ष्य निर्धारित करने, प्रेरित रहने और अपने लक्ष्यों के प्रति कड़ी मेहनत करने से आती है। हालाँकि, स्क्रीन देखना हमें आलसी बना देता है। अंदर ही अंदर असफलता का डर घर कर जाता है क्योंकि आप निश्चित नहीं होते कि आप अब और काम कर पाएंगे या नहीं।

इससे निपटने के लिए, आप वह कारण ढूंढने का प्रयास करें कि आपको जीवन में सफलता क्यों नहीं मिल पा रही है। आप एक दुश्मन ढूंढने की कोशिश करते हैं– बुरे वर्तमान राजनेता, बुरे अतीत के राजनेता, मुस्लिम, बॉलीवुड भाई–भतीजावाद, अमीर लोग, प्रसिद्ध लोग, कोई खलनायक जिसे आपके जीवन के वैसा न होने के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सके। हां, सिस्टम अनुचित और धांधली वाला है। फिर भी, सोशल मीडिया पर अपना समय बर्बाद करने से आपको मदद नहीं मिलेगी। अपने आप पर काम करना होगा।

शिकायत करना बंद करें। निर्माण करना शुरू करें। अपने लिए एक बेहतर जीवन बनाएं और एक बेहतर इंसान बनें। क्या आप अपना अधिकतम प्रयास कर रहे हैं? क्या आप यथासंभव कड़ी मेहनत कर रहे हैं? उस मनहूस फोन को तब तक दूर रखें जब तक आप अपने जीवन में कुछ नहीं कर लेते। विजेताओं को अनुचितता से बाहर निकलने का रास्ता मिल जाता है। आप भी कर सकते हैं।

हार्ड ड्रग्स के विपरीत, 4जी फोन वैध हैं। बच्चे इसे अपनी जेब में रख सकते हैं। फोन बेहद उपयोगी है– सूचना, खरीदारी या ऑनलाइन कक्षाओं के लिए। इसका उपयोग आगे बढ़ने और सीखने के लिए किया जा सकता है। लेकिन यह सचमुच एक युवा व्यक्ति के जीवन को, यहां तक कि एक पूरी पीढ़ी को भी नष्ट कर सकता है।

यह युवाओं पर निर्भर है कि वे भारत को वहां ले जाएं जहां वे इसे ले जाना चाहते हैं। उस पीढ़ी की कल्पना करें जिसने हमें आजादी दिलाई। वे कितने अच्छे थे? वे वहां थे, भारत को आजाद कराने के लिए लड़ रहे थे। मुझे अभी भी मंडल आयोग का विरोध या 2011 का अन्ना विरोध याद है। युवाओं को राष्ट्रीय मुद्दों की परवाह थी। आज, क्या युवा वास्तव में इस बात की परवाह करते हैं कि वास्तव में हम पर क्या प्रभाव पड़ता है? या क्या वे समाचारों पर भावनात्मक रूप से इस आधार पर प्रतिक्रिया करते हैं कि यह कितना सनसनीखेज, मनोरंजक या पागलपन भरा है?

सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात, बड़ी प्राथमिकता हमारी अर्थव्यवस्था को फिर से विकसित करना है। चीन हमसे पांच गुना ज्यादा अमीर है। इंटरनेट पर चीनी शहरों की गूगल तस्वीरें देखें। हमें वहां पहुंचने के लिए बहुत कुछ करना होगा। क्या हमें उस पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए? या क्या हमें अंतर–धार्मिक जोड़े को दिखाने वाले हानिरहित विज्ञापनों पर नाराजगी जतानी चाहिए? क्या आपको अपने करियर पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, या कभी न खत्म होने वाले ऐतिहासिक हिंदू–मुस्लिम मुद्दों पर अपना समय बर्बाद करना चाहिए? आप एक अच्छी जिंदगी बनाना चाहते हैं या बॉलीवुड की साजिशों को सुलझाना चाहते हैं?

इन सवालों का जवाब आप, आज का युवा, तय करेगा। कोई नेता, कोई अभिनेता, कोई सेलिब्रिटी आपके लिए यह नहीं करेगा। अपने आप को और इस देश को वहाँ ले जाएँ जहाँ आप इसे ले जाना चाहते हैं। भारत को गरीब और गौरवान्वित करने का लक्ष्य मत रखो। भारत और स्वयं को समृद्ध और विनम्र बनाने का लक्ष्य रखें। उस बेवकूफी भरे फोन को बंद करें, अपने दिमाग को उत्पादक और रचनात्मक चीजों में लगाएं और अपने जीवन और देश के लिए कुछ निर्माण करें।

वह पीढ़ी बनें जो 4जी से भारत को आगे रखे। चौथी पीढ़ी के रूप में समाप्त न हो जाएं।

प्यार,

चेतन भगत

टाइम्स ऑफ इंडिया में पूर्व प्रकाशित आलेख

नई उम्र, नई सोच

उम्मीदों से भरे आज के युवा

- 84 फीसदी युवक पोस्टग्रेजुएट डिग्री को अपनी आदर्श नौकरी के लिए जरूरी मानते हैं, जबकि 97 फीसदी उच्च शिक्षा के इच्छुक हैं।

- 82 फीसदी महिलाओं ने फुल टाइम रोजगार को अपनी पसंद बता कर इस रूढ़िवादी धारणा को गलत साबित कर दिया कि महिलाएं पार्ट टाइम रोजगार चाहती हैं।

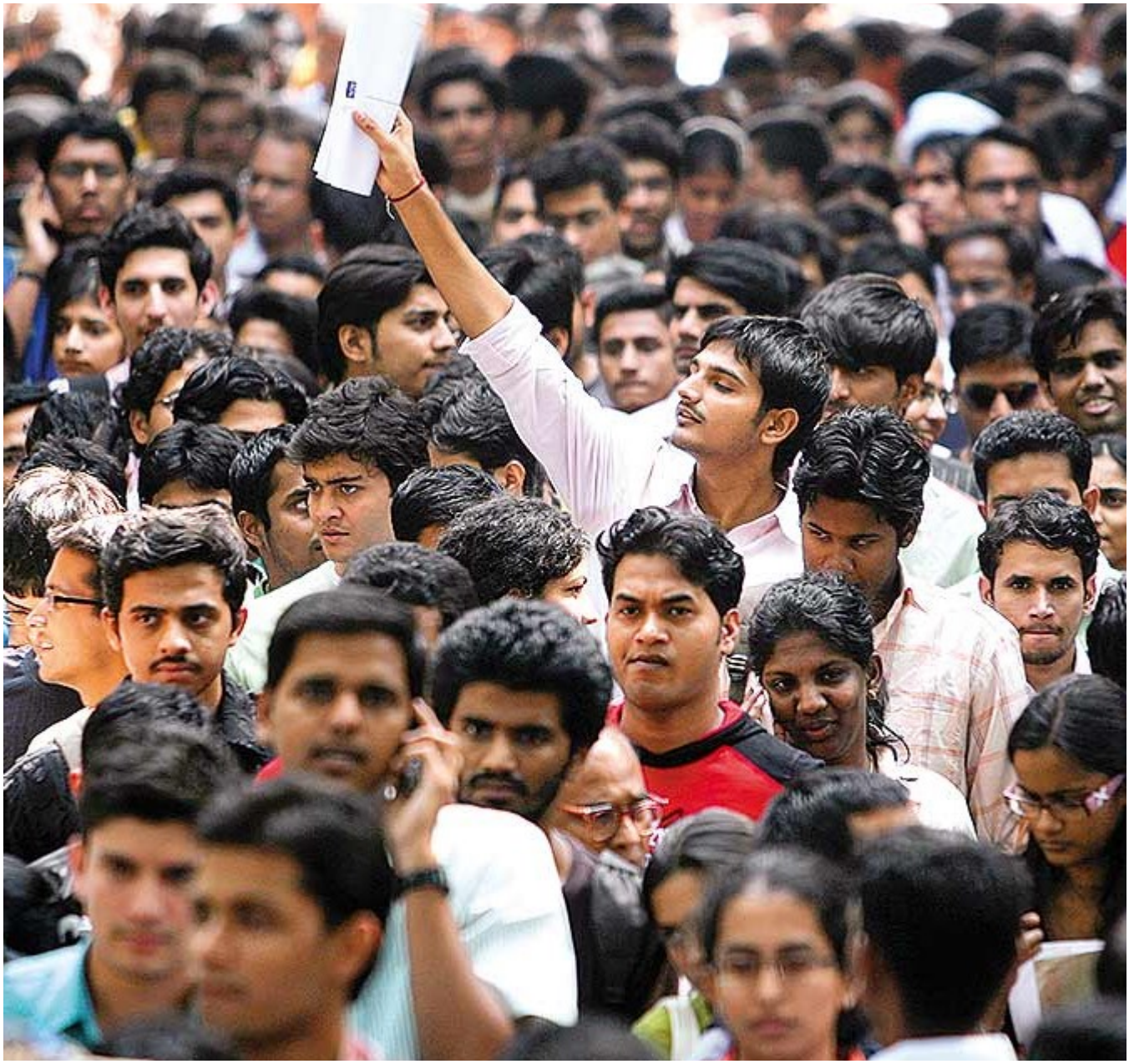

नई उम्र, नई सोच

भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था है। दुनिया भर के युवाओं का पांचवां हिस्सा यहीं बसता है। 1 अरब 30 करोड़ की आबादी का आधा हिस्सा 25 साल के नीचे का है, और एक चौथाई हिस्सा 14 साल से नीचे का है। भारत की युवा आबादी इसकी सबसे बेशकीमती संपत्ति है और सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण भी है। यह भारत को एक अद्वितीय जनसांख्यिकीय लाभ प्रदान करता है। लेकिन पूंजीगत विकास में बिना उचित निवेश के यह मौका लुप्त हो जाएगा। साथ ही, आज की दुनिया पहले से कहीं ज्यादा गतिशील और अनिश्चित है। चूंकि भारत तेज और एक समान आर्थिक, जनसांख्यिकीय, सामाजिक और तकनीकी बदलावों से गुजरता है, इसलिए यह सुनिश्चित करना चाहिए कि इसका विकास समावेशी हो और समाज के सभी वर्गों तक पहुंचता हो। भारत अपनी वास्तविक विकास क्षमता को महसूस करने में तब तक सक्षम नहीं हो पाएगा, जब तक यहां के युवा अपनी अर्थव्यवस्था में पर्याप्त रूप में और उत्पादक तरीके से भाग लेने में सक्षम नहीं होंगे।

ये समझने के लिए कि भारत के युवा कौन से स्किल और रोजगार चाहते हैं और ये आकलन करने के लिए कि मौजूदा शिक्षा व्यवस्था इन उम्मीदों को पूरा करती है या नहीं, वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम और ऑब्जर्वर रिसर्च फाउंडेशन ने साझा तौर पर भारत में 5,000 से अधिक युवाओं पर सर्वे किया।

नतीजे बताते हैं कि युवा भारतीय महत्वाकांक्षी हैं और अपने करियर के फैसलों में अधिक स्वायत्तता दिखाते हैं। वे बदलती स्किल जरूरतों को समझते हैं और उच्च शिक्षा ग्रहण करने के लिए उत्सुक हैं, अतिरिक्त प्रशिक्षण लेते हैं और स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम में शामिल होते हैं। ठीक उसी समय पर, कई फैक्टर उनकी महत्वकांक्षाओं की राह में रोड़ा बन रहे हैं और उन्हें काम की बदलती प्रकृति के साथ प्रभावी रूप से तालमेल बिठाने से रोक रहे हैं। सर्वे के नतीजे सरकारी नीतियों के लिए यह संदेश हो सकता है कि भारतीय युवाओं के लिए शिक्षा से आर्थिक गतिविधियों की ओर जाने का आसान रास्ता सुनिश्चित किया जाए।

यहां सर्वे के कुछ अहम निष्कर्ष हैं:–

1. भारतीय युवा स्वतंत्र हैं, आशावादी हैं और बदलते श्रम बाजार के लिए खुले हैं। भारत के युवाओं के करियर और शैक्षणिक पसंद पर परिवार और दोस्तों का प्रभाव घट रहा है। युवा तेजी से उत्पादक रोजगार के अवसरों और करियर की तलाश में हैं जो उनकी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को दिखाता है। सर्वे में जिन लोगों से सवाल पूछे गए उनमें से करीब आधे लोगों ने अध्ययन के क्षेत्र में अपनी रुचि के पीछे अपनी पसंद का हवाला दिया है, जबकि 19 फीसदी लोगों ने इसके पीछे अपने परिवार का हाथ बताया है। इसके अलावा, एक–तिहाई लोगों की रुचि आंत्रप्रेन्योरशिप में है, और 63 फीसदी लोग गिग वर्क के जरिए अपनी आमदनी को बढ़ाने में दिलचस्पी रखते हैं। यह रोजगार के अलग–अलग तरीकों के प्रति लोगों के खुलपेन को दिखाता है।

2. भारतीय युवाओं को अधिक मार्गदर्शन और करियर काउंसलिंग की जरूरत है। कई युवाओं को मनचाही और उपयुक्त नौकरी के मौके तलाशने के लिए कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। रोजगार और स्किल पर जानकारी की असमानता जैसे फैक्टर और उचित करियर लक्ष्यों को निर्धारित करने और रोजगार के विकल्प चुनने में मार्गदर्शन की कमी भारतीय युवाओं को पीछे धकेल रही है। 51 फीसदी लोगों ने बताया कि उनके स्किल से मेल खाने वाली नौकरी के अवसरों के बारे में जानकारी की कमी एक महत्वपूर्ण बाधा है। करीब 30 फीसदी लोग मानते हैं कि वो किसी तरह के सलाह–परामर्श के अवसरों से दूर हैं। 44 फीसदी लोग मांग और आपूर्ति की विसंगति में इसे सबसे महत्वपूर्ण फैक्टर मानते हैं। करियर काउंसलिंग और मेंटरिंग के जरिए दक्षता और महत्वाकांक्षा के बीच की असामनता को समझने में मदद मिल सकती है और ये युवा भारतीयों के करियर विकल्पों में सुधार करने में मददगार हो सकते हैं।

3. उच्च शिक्षा और स्किल डेवलपमेंट में युवा भारतीयों की दिलचस्पी। सर्वे में 84 फीसदी लोग पोस्ट ग्रैजुएट डिग्री को अपनी आदर्श नौकरी के लिए जरूरी मानते हैं, जबकि 97 फीसदी लोग उच्च शिक्षा में डिग्री के इच्छुक हैं। वे शिक्षा के चलते आ रहे दूसरे प्रारूपों के प्रति भी उत्सुक हैं। 76 फीसदी युवाओं ने स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम में हिस्सा लेने में दिलचस्पी जताई है। मुख्य तौर पर रोजगार के बढ़े अवसर और मोटी तनख्वाह इस लक्ष्य के लिए प्रेरित करते हैं। यह इस तथ्य से विरोधाभास करता है कि विकसित देशों में 60–70 फीसदी की तुलना में हमारे देश की कुल कामकाजी आबादी का 3 फीसदी से भी कम व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित है। भारत को अपने युवाओं के आशावाद का लाभ उठाना चाहिए और उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा और प्रशिक्षण के अवसरों के प्रसार का समर्थन करना चाहिए। मौजूदा समय में, सरकार द्वारा संचालित स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम के बारे में जागरुकता की बड़ी कमी है। उनकी गुणवत्ता और प्रासंगिकता को लेकर भी अर्थपूर्ण संदेह है। मौजूदा कार्यक्रमों के उत्थान को आगे बढ़ाने के लिए इसे प्रासंगिक, किफायती और सुलभ बनाना महत्वपूर्ण है।

4. स्किल गैप पाटने के लिए प्राइवेट सेक्टर को और काम करने की जरूरत है। भारत के युवाओं की क्षमता और दक्षता को बढ़ाने में प्राइवेट सेक्टर को ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाने की जरूरत है। भारत को विरोधाभास का सामना करना पड़ रहा है। एक ओर युवा बेरोजगारी बड़ी समस्या है, फिर भी प्राइवेट सेक्टर पर्याप्त रूप से

कुशल और बाजार के लिए तैयार श्रमिकों की कमी का विलाप कर रहा है। बुनियादी शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने में सरकार की भूमिका के बावजूद, प्राइवेट सेक्टर की बड़ी भागीदारी की आवश्यकता है। यह सुनिश्चित करेगा कि प्रशिक्षण की पहल समय की जरूरत के अनुसार और इंडस्ट्री की जरूरतों के हिसाब से स्किल प्रदान करने के लिए है। इन प्रोग्राम्स को इंडस्ट्री प्रोफेशनल्स के साथ बातचीत, सेमिनार और वर्कप्लेस का दौरा करने जैसी गतिविधियों के साथ जोड़ा जा सकता है।

5. भारत के सामाजिक–सांस्कृतिक मानदंडों की जटिलता। सर्वे में 34 फीसदी युवाओं ने बताया कि नौकरी की तलाश करते समय उनकी वैवाहिक स्थिति, लिंग, उम्र या पारिवारिक पृष्ठभूमि से संबंधित भेदभावपूर्ण व्यवहार और व्यक्तिगत पूर्वाग्रह एक प्रमुख बाधा है। सर्वे में 82 फीसदी महिलाओं ने फुल टाइम रोजगार को अपनी पसंद बता कर इस रूढ़िवादी धारणा को गलत साबित कर दिया कि महिलाएं पार्ट टाइम रोजगार चाहती हैं। इसी प्रकार, निरंतर इस मत के बावजूद कि घरेलू काम और अवैतनिक काम महिलाओं के लिए उपयुक्त और वांछनीय हैं, सिर्फ एक फीसदी युवा महिलाओं ने माना कि ये उनके लिए वांछनीय, उपयुक्त विकल्प है। चूंकि चौथी औद्योगिक क्रांति के साथ काम की प्रकृति में बदलाव हुआ, इसलिए मौजूदा लिंग आधारित पूर्वाग्रहों के बढ़ने की संभावना है, यदि उन्हें दूर करने के लिए समर्पित नीतियां और पहल लागू नहीं की जातीं हैं। भविष्य के कार्यक्षेत्र में आज की पूर्वाग्रहों को दोहराने के बजाय इसे कम करने की कोशिशों की जरूरत है।

6. रोजगार की तलाश में सोशल मीडिया और इंटरनेट बड़ी भूमिका निभा सकते हैं। जिन लोगों पर सर्वे किया गया उनमें 81 फीसदी लोग रोजगार के अवसरों की जानकारी हासिल करने के लिए मीडिया और इंटरनेट स्रोतों पर भरोसा करते हैं। फ्यूचर ऑफ वर्क, एजुकेशन एंड स्किल्स सर्वे बताता है कि जिन कंपनियों का सर्वे किया गया उनमें सिर्फ 14 फीसदी ने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के जरिए भर्ती की बात मानी। भारत के युवाओं के बीच सोशल मीडिया और इंटरनेट इस्तेमाल के प्रसार से शिक्षा मार्ग, रोजगार के अवसर, स्किल की जरूरतों और उपलब्ध स्किल डेवलपमेंट प्रोग्राम के बारे में जागरूकता बढ़ाने का अवसर मिलता है। 63 फीसदी लोगों के लिए, एक अच्छी तनख्वाह नौकरी का सबसे महत्वपूर्ण मानदंड है। पब्लिक सेक्टर में काम करने को तवज्जो देनेवाले और गिग वर्क और स्व–रोजगार जैसे अपरंपरागत रोजगार के विकल्पों में अविश्वास दिखाने वाले अधिकांश भारतीय युवाओं में मोटी तनख्वाह और जॉब सिक्योरिटी की धारणा है। बदलते श्रम बाजार और इंटरनेट के माध्यम से उभरती नौकरी की भूमिकाओं के बारे में अधिक जानकारी इन रूढ़िवादों को तोड़ने और विविध पेशेवर और शैक्षिक गतिविधियों के लिए भारतीयों की भूख बढ़ाने में मदद कर सकती है।

चौथी औद्योगिक क्रांति के साथ नौकरियों और काम की प्रकृति में बदलाव के साथ इस खाई (अंतर) के बढ़ने की संभावना हो सकती है। आगे बढ़ते हुए, विभिन्न सरकारी एजेंसियों और मंत्रालयों, निजी क्षेत्र, अकादमिक विशेषज्ञों, प्रशिक्षण संगठन, सिविल सोसाइटी और युवाओं के बीच सहयोग युवा भारत की क्षमता को बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण होगा। अगली पीढ़ी की आकांक्षाओं को पूरा करने की हमारी क्षमता श्रम उत्पादकता को बढ़ावा देने और समावेशी विकास के लिए काफी महत्वपूर्ण है।

साभारः https://www.orfonline.org

नशा

वेप या ई–सिगरेट का बढ़ रहा खतरा

प्रतिबंध के बाद भी गिरफ्त में आ रहे स्कूली बच्चे

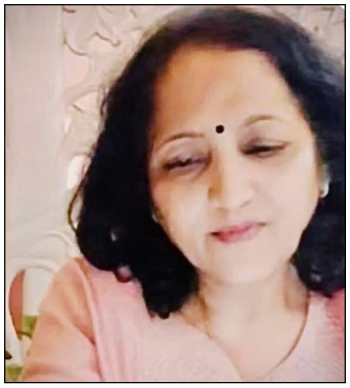

उषा किरण

(चित्रकला एवं संगीत में एम.ए., पी–एच.डी.। विभागाध्यक्ष ललित कला विभाग, मेरठ कॉलेज, मेरठ। कहानियां एवं कविताएं कई प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित।)

क्या आप जानते हैं कि 'वेप' यानि कि ई–सिगरेट क्या है? यदि नहीं, तो जरा सर्च करिए और जान लीजिए। यदि आपके घर में युवा या किशोर हैं तो आपके लिए तो यह जानना बहुत जरूरी है और साथ बैठ कर उनको उससे होने वाले नुकसान बता कर सख्त ताकीद करना भी बेहद जरूरी है, क्योंकि ये एक ऐसी लत है जो बहुत तेजी से स्कूल के बच्चों में पैर फैला रही है। हीरो और हीरोइन टेलीविजन पर नशे को ग्लैमराइज करते दिखाई देते हैं। आज वेब सीरीज का जमाना है और कई सीरीज में इसे खुल कर दिखाया जाता है। नशे को जिस तरह से यहां बढ़ावा दिया जा रहा है, वह किसी बड़े संकट से कम नहीं है।

ई–सिगरेट यानि कि इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट किसी लम्बी ट्यूब के रूप में होती है, जबकि इनकी बाह्य बनावट धूम्रपान उत्पादों जैसे सिगरेट, सिगार और पाइप जैसा डिजाइन किया जाता है। अधिकांशतः इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट के उपकरण पुनः उपयोग योग्य होते हैं, जिनके भागों को बदल कर

नशा

फिर से भरा जा सकता है। अनेक डिस्पोजेबल इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट भी विकसित किये गए हैं। मेरे संज्ञान में यह तब आया जब हमारे एक परिचित का बेटा अज्ञानता के कारण मुसीबत में फंस गया। उसकी क्लास के कुछ बच्चे क्लास में वेप ले रहे थे। अज्ञानतावश उसने भी उसकी सुगंध से आकृष्ट होकर उसका सेवन कर लिया। टीचर तक बात पहुँच गई और सख्त एक्शन लिया गया। घर पर खबर भेजी गई। रेस्टीकेट करने की बात चल रही है। बच्चे का कहना था कि उसकी कोई गलती नहीं है, वो उसकी सुगंध से आकर्षित हुआ, उसे पता नहीं था कि ये क्या चीज है? यदि उसे पता होता तो वो इस मुसीबत से बच जाता।

आज कई लोग ऐसे हैं जो ई–सिगरेट को नशे के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। खासकर युवाओं में यह एक क्रेज बन कर उभर रहा है, जो चिंता का विषय है। अध्ययन में अच्छे प्रदर्शन के बढ़ते दबाव व अकेलेपन के कारण बच्चों में बढ़ती मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को भी नशे की लत के महत्वपूर्ण कारण के रूप में चिह्नित किया गया है। सर्वे के मुताबिक ज्यादातर युवा ई–सिगरेट का सेवन दिखावे व शान के लिए करते हैं। वर्तमान आंकड़े बताते हैं कि अमेरिका में माध्यमिक से हाई स्कूल का दस में से एक छात्र ई–सिगरेट का उपयोग करता है। कई लोगों को ऐसा लगता है कि ई–सिगरेट के नुकसान कम है इसलिए वे इसका इस्तेमाल करते हैं, लेकिन हकीकत ये है कि इलेक्ट्रॉनिक सिगरेट भी सेहत के लिए कई तरह से नुकसानदेह है। आखिर क्या है ये ई–सिगरेट या वेप, आइए जानें।

ई–सिगरेट बैटरी से चलने वाली ऐसी डिवाइस है जिनमें लिक्विड भरा रहता है। यह निकोटीन और दूसरे हानिकारक केमिकल्स का घोल होता है। जब कोई व्यक्ति ई–सिगरेट का कश खींचता है तो हीटिंग डिवाइस इसे गर्म करके भाप में बदल देती है, इसीलिए इसे स्मोकिंग की जगह वेपिंग (vaping) कहा जाता है। ई–सिगरेट के तीन भाग होते हैं–रिचार्जेबल लिथियम बैटरी, निकोटीन कार्टेल और एवोपोरेट चेम्बर– इस हिस्से में छोटा हीटर लगा होता है, जो बैटरी से गर्म होता है निकोटिन को भाप में बदलता है।

वैज्ञानिक शोधों में यह कहा गया है कि यह दिल की धमनियों को कमजोर करती है। इसकी लत पड़ जाती है। इसमें निकोटीन के अलावा जो खुशबूदार केमिकल भरा होता है वह गर्म होने पर साँस के साथ फेफड़ों में जाता है और फेफड़ों के कैंसर की आशंका बढ़ जाती है। यह हार्ट को भी गंभीर नुकसान पहुंचा सकता है। ई–सिगरेट पीने वालों के हार्ट और ब्लड वेसल्स फंक्शन बिगड़ जाते हैं और कई तरह की समस्याएँ होने लगती हैं। ई–सिगरेट में मौजूद लिक्विड निकोटिन जलता नहीं है, इसलिए इससे धुआँ नहीं निकलता और सिगरेट जैसी गंध भी नहीं आती। लिक्विड निकोटिन गर्म होकर भाप बन जाता है। इसलिए जो लोग ई–सिगरेट पीते हैं वो धुएं की बजाय भाप खींचते हैं।

डब्ल्यू.एच.ओ. के मुताबिक ई–सिगरेट के फ्लेवर युवाओं को चुंबक की तरह खींचते हैं और अपना आदी बनाते हैं। किशोरों और युवाओं में इसके इस्तेमाल से फेफड़ों की बीमारियां दिन प्रतिदिन बढ़ रही हैं। ई–सिगरेट का चलन सबसे ज्यादा युवाओं में है। यहाँ तक कि स्कूल के बच्चे इसका ज्यादा उपयोग कर रहे हैं जिसके चलते भारत में ई–सिगरेट को पूरी तरह से बैन किया गया है। भारत सहित कई अन्य देशों में भी ई–सिगरेट की बिक्री पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया गया है। वित्त मंत्री ने ई–सिगरेट के निर्माण, वितरण व बिक्री पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया है। हेल्थ मिनिस्ट्री ने अध्यादेश में पहली बार नियम तोड़ने पर एक साल की जेल और एक लाख रुपये जुर्माना लगाए जाने का प्रस्ताव रखा है। इसके अलावा एक से ज्यादा बार नियमों का उल्लंघन करने पर 3 साल की जेल और 5 लाख रुपये का जुर्माना प्रस्तावित किया है। भारत में प्रतिबंध होने पर भी ऑफलाइन एवं ऑनलाइन दोनों ही तरीके से इसकी बिक्री हो रही है।

मकड़जाल

लक्ष्य से भटकी 4जी पीढ़ी

शौर्य प्रताप चौहान के लिए सब कुछ एकदम ठीक चल रहा था। अपनी कक्षा के सबसे प्रतिभाशाली छात्रों में से एक रहे चौहान ने साल 2014 में अपनी 10वीं की बोर्ड परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। फिर, बिना किसी स्पष्ट कारण के, उसके अंक कम होते चले गए। 12वीं की बोर्ड परीक्षा में उसने सिर्फ 75 फीसदी अंक हासिल किए। राजस्थान के कोटा में स्थित एक जाने–माने कोचिंग इंस्टिट्यूट से कोचिंग के बावजूद, वह इंजनियरिंग की संयुक्त प्रवेश परीक्षा (जॉइंट एंट्रेंस एग्जाम) पास करने अथवा किसी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) में अपना प्रवेश सुरक्षित करने में विफल रहा। इसके बाद उसने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में गणित की पढ़ाई की और बड़ी मुश्किल से किसी तरह स्नातक हो पाया, लेकिन उसका कहना है कि अब वह स्वयं से गणित का एक भी प्रश्न हल नहीं कर सकता।

सालों तक चौहान ने अपनी इन सारी मुसीबतों के लिए अपने टूटे हुए रोमांटिक रिश्ते को दोष दिया। कई अन्य लोगों की तरह, उसके माता–पिता ने भी बुरी संगति, ध्यान लगाने की कमी और आमतौर पर युवा वयस्कों द्वारा सामना की जाने वाली भावनात्मक समस्याओं को दोषी ठहराया। पर एक बात थी जिस

मकड़जाल

पर किसी ने ध्यान नहीं दिया और वह था चौहान का सबसे अंतरंग, निरंतर साथ रहने वाला, उसका अपना स्मार्टफोन।

साल 2019 से ही राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम के डॉ. राकेश पासवान और डॉ. ईशानराज के नेतृत्व में एक टीम एक ऐसी महामारी से जूझ रही है जो कई युवा भारतीयों के जीवन को नष्ट–भ्रष्ट करती जा रही है। इसी उद्देश्य से उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले (पूर्व में इलाहाबाद) के मोतीलाल नेहरू मंडल अस्पताल में डॉक्टरों ने एक मोबाइल नशामुक्ति केंद्र स्थापित किया है। कुछ युवाओं के लिए तो यही उनकी एकमात्र आशा है।

विशेषज्ञों ने लंबे समय से व्यावहारिक व्यसन (बेहवियरल एडिक्शन) के अस्तित्व को मान्यता दी हुई है। एक ओर जहां ड्रग्स (मादक पदार्थों) के आदी लोग किसी मादक पदार्थ पर निर्भर हो जाते हैं, वहीं व्यावहारिक व्यसनी– जैसे की जुआरी क्लेप्टोमेनियाक्स (आदतन छोटी–मोटी चोरी करने वाले) किसी खास कृत्य को करने से आराम और आनंद प्राप्त करते हैं। भारत में स्मार्टफोन की लत से जुड़ा नैदानिक साहित्य (क्लीनिकल लिटरेचर) काफी कम है, लेकिन एक अध्ययन के तहत युवा लड़कों में इसके प्रति उच्च स्तर की निर्भरता पाई गई है। 2014 के एक अन्य शोध पत्र ने युवाओं में स्मार्टफोन के प्रति निर्भरता के स्वास्थ्य पर पड़ने वाले बुरे प्रभावों की ओर इशारा किया।

कई अन्य लोगों की तरह, चौहान द्वारा फोन के उपयोग में तब काफी तेजी से वृद्धि हुई जब उसने एक साधारण स्मार्टफोन से टचस्क्रीन के उपयोग की ओर कदम बढ़ाया। उसने फोन कॉल, व्हाट्सएप, दो–दो फेसबुक अकाउंट (जिनमें वह दिन में लगभग 400 बार लॉग इन और लॉग आउट करता था) और यूट्यूब पर दिन में 12 घंटे से अधिक का समय बिताना शुरू कर दिया। उसने बताया, ''मैं पूरे–पूरे दिन चारपाई पर लेटा रहता था और अपने फोन का उपयोग करने के अलावा कुछ नहीं करता था।''

हालांकि, यह कोई असामान्य या अनूठी कहानी नहीं है। डॉ ईशानराज कहते हैं, ''एक मामले में, एक अभिभावक जोड़ा अपने बेटों, जो 11वीं और 12वीं में थे, के बारे में चिंता करते हुए हमारे पास आया। उनमें से एक लड़के ने तो उसकी परीक्षा में बैठने से साफ इनकार कर दिया था। जब माता–पिता ने उन दोनों से उनका फोन छीनने की कोशिश की तो वे हिंसक हो उठे। उस अनुभव ने ही अंततः हमें स्मार्टफोन नशामुक्ति केंद्र स्थापित करने के लिए प्रेरित किया।''

चौहान की कहानी कोई अपवाद भी नहीं है। उसके एक दोस्त आकाश जायसवाल, जो एक ग्रामीण पृष्ठभूमि से आता है, ने वीडियो गेम पबजी खेलने की लत के कारण कालेज की पढ़ाई छोड़ दी है. चौहान याद करते हुए कहते हैं, ''उसने कहा कि वह पिता की किराने की दुकान संभालेगा और पत्राचार से डिग्री हासिल कर लेगा।'' ऐसा भी नहीं है कि युवा पीढ़ी इन खतरों से अनजान है। कर्मचारी चयन आयोग (एसएससी) परीक्षा की तैयारी कर रहे 23 वर्षीय समरजीत यादव ने अपने फोन से सभी सोशल मीडिया ऐप्स को डिलीट कर दिया है। वे कहते हैं, ''अक्सर मैं अपनी मां से एक कप चाय मांगने के बाद अपने फोन की वजह से विचलित हो जाता हूं और एक ऐप से दूसरे ऐप पर आता–जाता रहता हूं। तब, मुझे एहसास होता है कि चाय तो ठंडी हो गई है, इसलिए मैं उसे फिर इसे मेरे लिए गर्म करने के लिए कहता हूं। फिर, वही बात बार–बार होती रहती है।'' प्रतियोगी परीक्षा के एक अन्य प्रत्याशी सत्यम शुक्ला ने अपना फोन इस उम्मीद के साथ चार्ज करना बंद कर दिया है कि इससे उसके उपयोग का समय कम हो जाएगा। अभिषेक कुमार तो इससे भी एक कदम आगे चले गए और उन्होंने हाल ही में अपना फोन तोड़ दिया। वे कहते हैं कि उन्होंने यह कदम 'मोबाइल की लत से कैसे छुटकारा पाएं' के बारे में गूगल पर अंतहीन सर्च के बाद तंग आकर उठाया।

पिछले महीने तपती हुई गरमी की एक दुपहरी में प्रयागराज के प्रसिद्ध सुभाष चौराहा के पास से तीन युवकों का एक

मकड़जाल

समूह गुजरा। उनमें से एक को पल्सर बाइक चलाने का काम सौंपा गया था, जबकि बीच में बैठा एक युवक इंस्टाग्राम रीलों को देख रहा था और तीसरे वाला संगीत सुन रहा था। उनमें से एक ने बताया कि हमारे पास बाइक चलाने के लिए एक रोटा (बारी–बारी से किया जाने वाला) सिस्टम है। लड़ाई इस बात के लिए नहीं होती कि कौन ड्राइव करता है, यह इस बात पर होती है कि कौन सबसे पीछे बैठता है, ताकि वह फ्री होकर अपने स्मार्टफोन का उपयोग कर सके।

सार्वजनिक रूप से अपने फोन से चिपके किशोर छोटे शहरों और ग्रामीण भारत के उसी तरह के प्रतीक बन रहे हैं जैसी कि अपने खेतों में काम कर रहे किसान। प्रयागराज के एक ऐसे छात्र की कहानी बड़ी मशहूर है, जिसे लैम्प–पोस्ट से टकराने या नालियों में गिरने से बचने के लिए एक साथी की जरूरत रहती थी, क्योंकि वह अपने स्मार्टफोन से अपनी नजरें नहीं हटा सकता था। हालांकि यह कहानी किंवदंती हो सकती है, लेकिन इसके पीछे का संदेश नहीं। जब एक दशक पहले पहली बार स्मार्टफोन की लत के बारे में शोध सामने आया, तो केवल कुछ लोगों ने इस पर ध्यान दिया. हालांकि, जब पीड़ित परिवारों ने मदद मांगना शुरू किया तो मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों ने इसके बारे में काम करना शुरू कर दिया।

भारत का पहला स्मार्टफोन नशामुक्ति केंद्र जून 2014 में बेंगलुरु में खोला गया था। इसके तुरंत बाद दिल्ली में इसका अनुसरण किया गया। साल 2019 में पुणे में और फिर उत्तर प्रदेश के तीन जिलों में ऐसे केंद्र स्थापित किये गए थे। एक केंद्र अमृतसर में भी है। डॉ पासवान कहते हैं, ''धीरे–धीरे, युवाओं के दिमाग का स्थान (ब्रेन स्पेस), खाली समय और रचनात्मकता वास्तविक दुनिया से दूर होती जाती है और स्मार्टफोन के अंदर कैद हो जाती है।'' उपचार से मदद मिल सकती है। चौहान सालभर से दवा पर हैं और अब उनकी ध्यान क्षमता भी बढ़ गयी है। उनका स्क्रीन–टाइम (फोन पर बिताया गया समय), जो पहले दिन में 14 घंटे से अधिक था, अब घटकर 7–8 घंटे हो गया है। हालांकि, अभी ऐसी कोई जादुई गोली नहीं है जो इस समस्या को तुरंत ठीक कर सकती है। डॉ ईशानराज कहते हैं, ''हमने 400 से अधिक रोगियों को पंजीकृत किया है। लेकिन उनमें से केवल 40 प्रतिशत ही फॉलो–अप के लिए वापस आए।''

क्लीनिकल लिटरेचर से पता चलता है कि सभी अन्य व्यसनों की तरह, इसमें भी नशा मुक्ति की प्रगति निराशाजनक रूप से धीमी हो सकती है, और इसके फिर से उभर आने (रिलैप्स) की दर काफी अधिक हो सकती है। प्रत्येक व्यसन, चाहे वह व्यावहारिक हो या मादक द्रव्यों के सेवन वाला, जटिल भावनात्मक, व्यक्तिगत और सामा. जिक कारकों से जुड़ा हुआ होता है। सभी जरूरतमंद युवाओं को निरंतर रूप से मानसिक स्वास्थ्य सहायता प्रदान करने के लिए पर्याप्त संसाधन मौजूद नहीं हैं। प्रयागराज नशामुक्ति केंद्र के डॉक्टरों का मानना है कि समस्या और भी विकराल होने वाली है। डेलॉयट के एक अध्ययन के अनुसार, साल 2026 तक भारत दूसरे सबसे बड़े स्मार्टफोन निर्माता और लगभग एक अरब उपयोगकर्ताओं के बाजार के रूप में उभरेगा, और ग्रामीण क्षेत्रों में इंटरनेट–इनेबल्ड फोन की बिक्री अधिक होगी। स्मार्टफोन की कीमतें लगातार गिर रही हैं और ऑनलाइन परीक्षा, सेमिनार, मनोरंजन से लेकर स्थानीय फलों के जूस की दुकान पर 20 रुपये के भुगतान तक हर चीज के लिए उनका उपयोग सर्वव्यापी होता जा रहा है। स्मार्टफोन उपयोगकर्ताओं की संख्या और अधिक वृद्धि के लिए तैयार है, और इसके साथ, ही इसके नशेड़ियों की संख्या भी अनवरत रूप से बढ़ती चली जाएगी।

साभारः https://hindi.theprint.in

नए युग का युवा

AI और युवा पीढ़ी में हाई–टेक रिश्ता

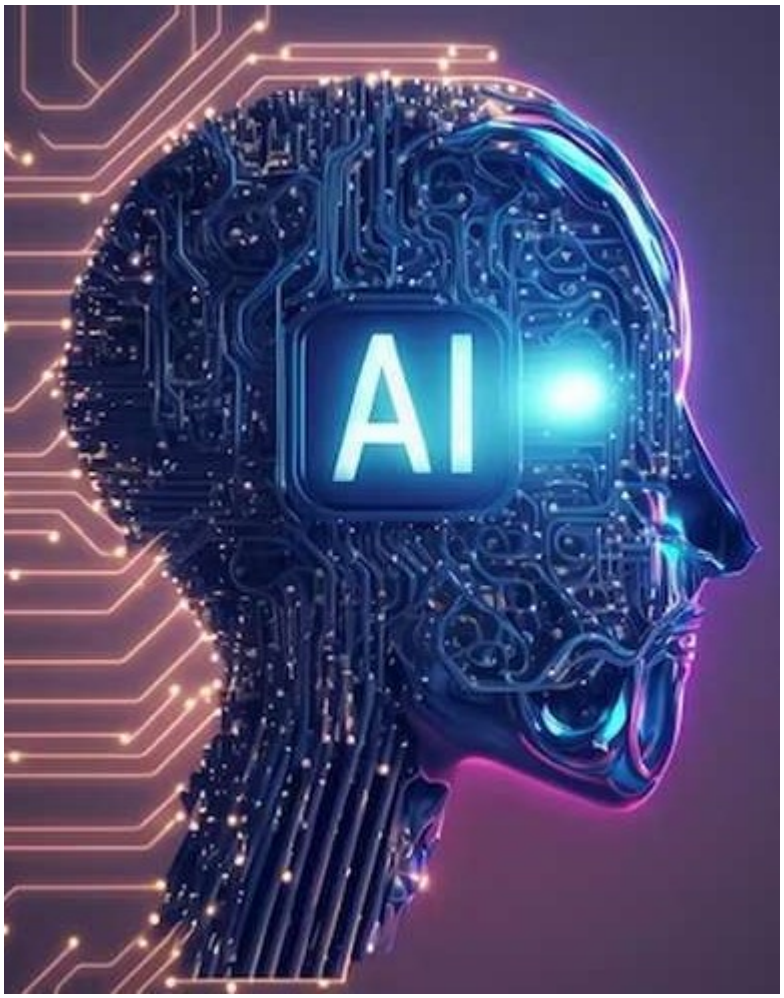

भारत में "ए.आई. फॉर ऑल"

भारतीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए ए.आई., 1.3 प्रतिशत की अनुमानित अतिरिक्त वार्षिक विकास दर के माध्यम से बहुत बड़ा अवसर लाने जा रहा है और एक दशक में एक ट्रिलियन अमरीकी डालर अतिरिक्त राशि जोड़ना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बहुत बड़ी सफलता होगी। विशेषज्ञों के अनुसार भारत ए.आई. समाधान विकसित करने के लिए विश्व स्तर के उद्यमों और संस्थानों के लिए सही "प्लेग्राउंड" प्रदान करता है, जिसे बाकी विकासशील और उभरती अर्थव्यवस्थाओं में आसानी से लागू किया जा सकता है और "सोल्व्ड इन इंडिया" मिशन, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एज ए सर्विस (AIaaS) के साथ सही तालमेल में है।

भारत की लगभग 52 प्रतिशत आबादी 30 साल की आयु से कम की है। यहां इंटरनेट की पहुंच की दर 43 प्रतिशत है। ऐसे में भारत के पास चौथी औद्योगिक क्रांति (4IR) को आगे बढ़ाने की जबरदस्त संभावनाएं मौजूद हैं। विश्व जनसंख्या समीक्षा (WPR) के आकलनों के मुताबिक मौजूदा साल दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के लिए अहम साबित होने वाला है। जनवरी 2023 के मध्य तक भारत दुनिया की सबसे बड़ी आबादी वाला देश बन गया। 1.417 अरब की आबादी के साथ भारत ने 1.412 अरब की आबादी वाले देश चीन को पीछे छोड़ दिया। ऐसे में विशाल मानव संसाधनों (खासतौर से युवा आबादी) के प्रभावी इस्तेमाल को लेकर भारत की क्षमताओं पर दुनियाभर का ध्यान गया है। अंतरराष्ट्रीय जगत ये जानना चाहता है कि क्या भारत अपनी युवा शक्ति के बूते अपनी घरेलू अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देकर विश्व मंच पर एक प्रमुख खिलाड़ी के तौर पर उभर सकेगा।

तकनीकी दायरों (जैसे AI, डेटा सुरक्षा, डेटा प्रॉसेसिंग और हस्तांतरण, DNA एडिटिंग) में होने वाली उन्नति समूची अर्थव्यवस्था (खासतौर से युवाओं) में उत्पादकता के पूरक के तौर पर काम करती है। इस कवायद से राष्ट्रों की आंतरिक और अंतरराष्ट्रीय नीतियों का कायाकल्प होता है। लिहाजा तात्कालिक तौर पर उन क्षेत्रों में निवेश किए जाने की दरकार है जिनसे युवाओं को लाभ हो और टिकाऊ सामाजिक–आर्थिक प्रगति मुमकिन हो सके। मानवीय पूंजी निवेश में स्वास्थ्य और शिक्षा, दो अनिवार्य तत्व हैं। इन क्षेत्रों में निवेश करके भारत एक कुशल और स्वस्थ श्रमबल तैयार कर सकता है। इस कवायद से आर्थिक वृद्धि को रफ्तार मिलेगी और संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDG) को भी बढ़ावा मिलेगा। खासतौर से SDG 3 (अच्छी सेहत और बेहतरी) और SDG 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) को आगे बढ़ाने पर जोर दिए जाने की दरकार है।

युवा आबादी के पास शिक्षा हासिल करने के गतिशील अवसरों तक पहुंच होनी चाहिए। डिजिटल मोर्चे पर उभरते अवसरों को पूर्ण रूप से अपनाने के लिए बुनियादी और प्रमुख श्रम कौशलों में निवेश किए जाने की जरूरत है। सर्वप्रथम, 12 लाख छात्रों के

स्कूल से बाहर रहते (ज्यादातर शुरुआती स्तर पर) भारत में शिक्षा की गुणवत्ता एक अहम चुनौती बनी हुई है। व्यक्तिगत तौर पर शैक्षणिक अनुभव मुहैया कराकर AI इस मसले के निपटारे में मदद कर सकती है। इसी तरह चैटबॉट्स छात्रों को तत्काल फीडबैक और मदद पहुंचा सकते हैं, जिससे छात्रों को खुद की रफ्तार से सीखने की सहूलियत मिल जाएगी। इसके साथ–साथ AI से संच. ालित अनुकूलित शैक्षणिक प्लेटफॉर्म्स उन क्षेत्रों या विषयों की पहचान कर सकते हैं जिनमें छात्र जद्दोजहद कर रहे होते हैं। इसके बाद ऐसे छात्रों को लक्षित करके सहायता उपलब्ध करवाई जा सकती है।

दूसरा, भारत में (खासतौर से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में) चिकित्सकों और मरीजों के निम्न अनुपात से जुड़ी समस्या का निपटारा करके AI स्वास्थ्य के क्षेत्र में परिणामों में सुधार ला सकता है। इतना ही नहीं, AI से संचालित मेडिकल ऐप्लिकेशंस, समय रहते चिकित्सकीय जांच कर जरूरी इलाज की सलाह दे सकते हैं। मिसाल के तौर पर मुंबई स्थित स्टार्ट अप Qure-ai ने AI से संचालित मेडिकल इमेजिंग प्लेटफॉर्म विकसित किया है। यह चिकित्सकीय प्रयोग के लिए ली जाने वाली तस्वीरों में ऊंची सटीकता के साथ गड़बड़ियों की पहचान कर सकता है। भारत में कोविड–19 महामारी के खिलाफ जंग में भी AI प्रौद्योगिकी ने अहम भूमिका निभाई है। कोविड के मामलों की शुरुआती पड़ताल करने, संपर्कों का पता लगाने, क्वारंटीन और सामाजिक दूरी से जुड़े नियम मनवाने के लिए इसका प्रयोग किया गया। इसके अलावा कोविड–19 की चपेट में आए मरीजों के इलाज और दूर से उनपर निगरानी रखने के साथ–साथ टीके और दवाओं के विकास में भी इसका प्रयोग किया गया।

AI से डरें या नहीं?

श्रम के भविष्य के संदर्भ में उभरती प्रौद्योगिकियों द्वारा पेश किए गए अवसर और चुनौतियां बेशुमार हैं। इसके मद्देनजर कौशल निर्माण नीतियों को आकार देने और उनके क्रियान्वयन में सरकारों, कर्मचारियों, कामगारों और युवाओं की अहमियत को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। मिसाल के तौर पर AI के आने वाले समय में संभावित बेरोजगारी का खतरा। आकलन के मुताबिक 20 वर्षों में स्वचालन के चलते भारत में तकरीबन 69 प्रतिशत नौकरियां खतरे की जद में रहेंगी। इसके अलावा शहरी और ग्रामीण आबादियों, अल्पसंख्यक समूहों और तमाम आयु वर्गों की तकनीकी कौशल में विषमताओं के चलते आर्थिक असमानताएं और गहरी हो सकती हैं। ऐसे में अगर कामगारों को नए सिरे से हुनरमंद बनाने और उनकी कार्यकुशलता के स्तर को ऊंचा उठाने के प्रयास नहीं किए गए तो समाज में उपद्रव के हालात बन सकते हैं।

AI संचालित प्रणालियों को लेकर एक और चिंता है कि ये मौजूदा पूर्वाग्रहों और भेदभावों को और गहरा कर सकते हैं। खासतौर से हाशिए पर मौजूद समूहों को इसका दंश झेलना पड़ सकता है। इनमें नस्ली अल्पसंख्यक, महिलाएं और दिव्यांग जन शामिल हैं। इस तरह के भेदभावों से असमानता की मौजूदा खाई और चौड़ी हो सकती है। इससे सतत विकास लक्ष्यों के सामाजिक पूंजी पक्ष की ओर प्रगति में बाधा आ सकती है। इसके अलावा संवेदनशील क्षेत्रों में AI के प्रयोग से निजता और सुरक्षा से जुड़ी चिंताएं भी पैदा होती हैं। इनमें स्वास्थ्य सेवा, राष्ट्रीय सुरक्षा और कानून का अनुपालन जैसे क्षेत्र शामिल हैं। मिसाल के तौर पर AI से संचा. लित मेडिकल उपकरण और ऐप्लिकेशंस निजी डेटा इकट्ठा कर सकते हैं। इन जानकारियों के दुरुपयोग के गंभीर परिणाम देखने को मिल सकते हैं।

भारत सरकार ने AI के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए कई कदम उठाए हैं। इनमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस कार्य बल की स्थापना और नीति आयोग द्वारा आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर राष्ट्रीय रणनीति #AIFORALL का निर्माण शामिल हैं। भारत के लिहाज से देखें तो प्रौद्योगिकी से संचालित श्रम बाजारों में मांग–आपूर्ति के अनुकूल संतुलन पर पहुंचने के लिए कौशल कार्यक्रमों में रफ्तार भरना निहायत जरूरी होगा। इससे एक पूरी पीढ़ी आजीविका के अवसरों के हिसाब से सशक्त बन जाएगी। साथ ही भारतीय युवा दुनिया भर के श्रम बाजारों के लिए उपयुक्त हो जाएंगे।

साभार: www.orfonline.org/hindi

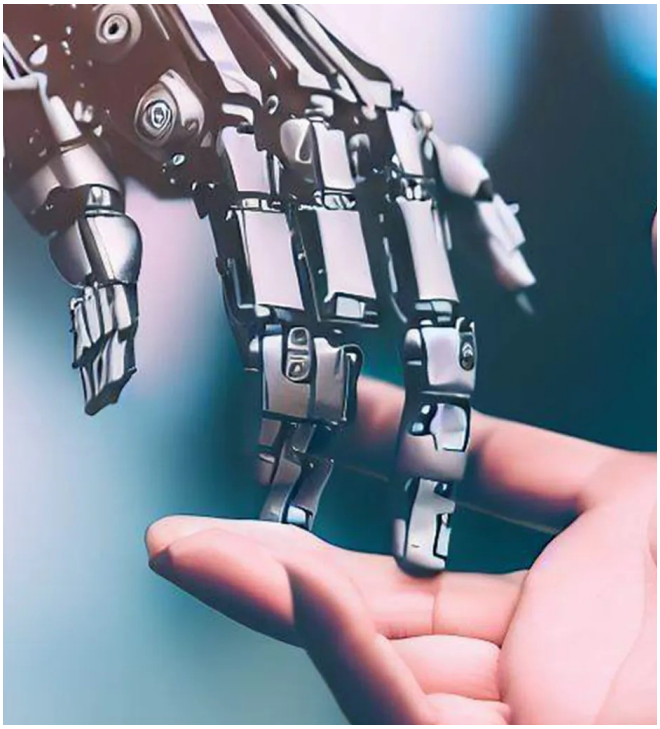

उलझन सुलझे ना

चांद के पार चलीं बेटियां

..मगर निकलना होगा सोशल साइटों के मायाजाल से

एक तरफ ऐसी बेटियां, जिनके नाम से देश का सीना चौड़ा हो रहा है, तो दूसरी तरफ रील्स के मायाजाल में फंस रहीं बेटियां घुप्प अंधेरे में खोती जा रही हैं। चंद मिनटों में बिना मेहनत के लाखों रुपए कमाने और अभासी दुनिया की खुशियों को ही असली जिन्दगी समझ रही हैं।

चंद सेकंड का वीडियो, लाइक्स और व्यू। फूहड़ता, अश्लीलता और देह का प्रदर्शन पैसा कमाने का सबसे आसान जरिया बन गया है। इसके चक्कर में युवा पढ़ाई–लिखाई तक छोड़ने को तैयार हैं।

सविता कुमारी

(लाडली मीडिया अवार्ड से सम्मानित पत्रकार। इनका कार्यक्षेत्र पटना है)

उलझन सुलझे न, रास्ता सूझे ना, जाऊं कहां मैं.... इंटरनेट की दुनिया शायद ऐसी ही होती है। यह विशाल महासागर जैसा है। जहां गोता लगाना तो आसान है, लेकिन निकलना बहुत ही मुश्किल। इस समुद्र में आज का युवा खोता जा रहा है। खासकर रील्स ने युवाओं को ऐसी लत लगायी है कि जिसमें युवा पढ़ाई–लिखाई, नाते–रिश्ते सब भूलकर सिर्फ दिखावे की जिन्दगी जिए जा रहे हैं। टिकटॉक से शुरू हुआ सिलसिला रील्स के मकड़जाल में फंस चुका है। चंद सेकंड का वीडियो, लाइक्स और व्यू। फूहड़ता, अश्लीलता और देह का प्रदर्शन पैसा कमाने का सबसे आसान जरिया बन गया है। इसके चक्कर में युवा पढ़ाई–लिखाई तक छोड़ने को तैयार हैं।

चंद्रयान–3 की लैंडिंग में भागीदारी दे रहीं

हम चंद्रयान–3 के साथ चांद पर पहुंच गए। चंद्रयान–3 की सफल लैंडिंग के साथ भारत ने इतिहास रच दिया। इस विजय रथ को चांद पर पहुंचाने में भारत की 'रॉकेट वुमन' ऋतु कारिधाल के हाथ में कमान था। इसके अलावे 54 महिला इंजीनियरों का दम था। आधी आबादी न सिर्फ चांद जैसी रोटियां बनाना जानती हैं बल्कि चांद पर बिक्रम को उतारना भी जानती हैं। आज पूरी दुनिया भारत का विजयगान कर रहा है। हाल में रूस की लूना के क्रैश होने के बाद यह हमारी सबसे बड़ी जीत है और यकीनन इस जीत का श्रेय हमारी महिला वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को मिलना चाहिए। एक तरफ ऐसी बेटियां, जिनके नाम से देश का सीना चौड़ा हो रहा है, तो दूसरी तरफ रील्स के मायाजाल में फंस रहीं बेटियां घुप्प अंधेरे में खोती जा रही हैं। चंद मिनटों में बिना मेहनत के लाखों रुपए कमाने और अभासी दुनिया की खुशियों को ही असली जिन्दगी समझ रही हैं।

रील्स के अंधेरे में खो रहीं हमारी बेटियां

हालिया उदाहरण पटना के मेरिन ड्राइव पर हंटर क्वीन नाम की लड़की का है। बारहवीं की छात्रा पर रील्स बनाने का ऐसा शौक चढ़ा कि उसने मेरिन ड्राइव पर मोटरसाइकिल पर स्टंट करते हुए और पिस्टल लहराते हुए रील्स इंस्टा पर डाल दिया। लड़की का नाम लवली है। राजधानी के रवीन्द्र बालिका स्कूल की छात्रा है। वह कहती है, पढ़ना नहीं चाहती है। उसे राइडर बनना है। पढ़–लिखकर क्या करना है, इंस्टा पर रील्स से एक लाख रुपए कमा लेती हूं। रील्स बनाने वाली लड़की का वीडियो सोशल साइट पर वायरल हुआ तो पटना पुलिस लड़की की खोज में जुट गयी।

उलझन सुलझे ना

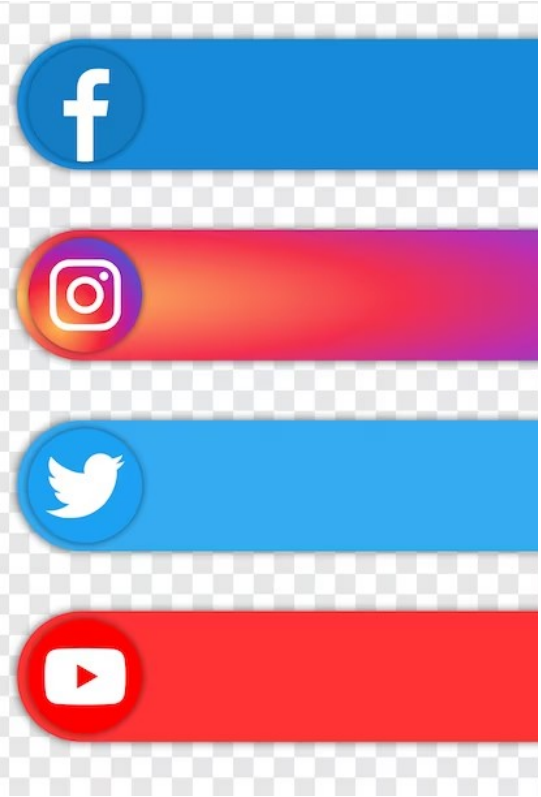

इंस्टा वीडियो के आधार पर लड़की को ढूंढ़ा गया। लड़की गांधी मैदान थाने के पास की रहने वाली थी। उसने मां से जिद करवाकर रेंजर बाइक खरीदी थी। बाइक चलाना उसका शौक है। उम्र महज 17 साल और शौक बाइक पर स्टंट करने का। जब पुलिस मामले की तह में पहुंची तो पता चला कि उसकी मां ने कर्ज लेकर बेटी की जिद पूरी की थी। मां ने अपने गहने बेच दिए थे और कर्ज लिए। थाने में आने के बाद लड़की ने कहा कि वह खिलौने वाला पिस्टल लहरा रही थी। लेकिन बिना हेलमेट और तेज बाइक चलाने के जुर्म में 40 हजार रुपए का जुर्माना भरना पड़ा। मां ने फिर कर्ज लेकर जुर्माना भरा। लड़की कहती है कि इतने पैसे तो एक रील्स से कमा लेगी। हंसते हुए फिर से रील्स बनाने में लग गई है। यह तो सिर्फ एक लड़की की कहानी है। लड़की ने बताया कि उसे पढ़ने में मन नहीं लगता है। वह राइडर बनना चाहती है और फेमस बनकर रहेगी। इसके लिए चाहे जो करना है करेगी। खुद को खुश करने के लिए वह टैटू बनवा रही है। यह एक लड़की की कहानी है। राजधानी में एक और वीडियो वायरल है। जिसमें लड़की मेरिन ड्राइव पर बाइक पर स्टंट करते हुए पिस्टल लहरा रही है। इन रील्स के पीछे का मकसद कम समय और मेहनत में पैसा और शोहरत पा लेना है। अपनी धुन में मगन इन युवाओं को न तो अपने माता–पिता का संघर्ष नजर आता है और न ही धूमिल होता अपना भविष्य।

महिला हिंसा के 30 प्रतिशत मामले साइबर क्राइम से

इंटरनेट की दुनिया ज्ञान का भंडार है। लॉकडाउन ने इंटरनेट और मोबाइल फ्रेंडी बना दिया है। लेकिन यह सोशल साइट की दुनिया बेटियों को गुमनाम अंधेरे में ढकलती जा रही है। सोशल साइट पर कुछ दिनों की दोस्ती, वीडियो कॉल में ऑनलाइन सेक्स जैसी चीजें, उन्हें साइबर अपराध के गश में ले रही है। अधिकतर लड़कियां शिकायत भी नहीं करने जाती हैं क्योंकि शहरों में पढ़ने के लिए वह घर से लड़ाई लड़के आती हैं। वह डर से कुछ नहीं कर पाती हैं।

आंकड़े बताते हैं कि महिलाओं पर होने वाले 30 प्रतिशत अपराध अब साइबर दुनिया से जुड़े हैं। सोशल साइट पर फेक आईडी बनाकर लड़कियों के फोटो और वीडियो वायरल किए जा रहे हैं। यह सब इसलिए है कि वे सोशल साइट की अभासी दुनिया को अपना समझने लगी हैं। घर, भाई–बहन और माता–पिता से अधिक बाहर दूर देश में बैठा व्यक्ति अपना बन रहा है। वह पड़ोस के दोस्तों से बात करें या न करे, लेकिन अमेरिका में जॉन उसका दोस्त जरूर है। यह दुनिया इन लड़कियों को अकेलेपन और तनाव की बीमारी में जकड़ रहा है। सोशल साइट पर ऑनलाइन होकर मौत को लगे लगा रही हैं और माता–पिता को भनक तक नहीं है।

सोच बदलनी होगी

कैम्पस में प्यार और सेक्सुअलिटी

एलजीबीटीक्यू समुदाय के प्रेम को स्वीकृति नहीं

प्रेम! वह भावना जिसे अभिव्यक्त करने के लिए किसी अलंकार की आवश्यकता नहीं होती। हां! लोगों को एक सुन्दर जीवन जीने के लिए इससे अलंकृत होने की आवश्यकता जरूर है। संसार में धड़कते हर हृदय को किसी अन्य धड़कन की गाहे–बगाहे चाह उठती है, थमती है, पूर्ण होती है और कई दफा टूट भी जाती है। फिर भी, प्रेम को जीवन का सार कहा गया है। मनुष्य अपने मन मुताबिक अपनी भावना व पहचान का प्रर्दशन करना चाहता है। पर क्या हर किसी का अपने तन और मन पर सम्पूर्ण अधिकार है? होना चाहिए, पर है नहीं। और कई छोटे–बड़े अधिकार से वंचित रहने की तरह इसका श्रेय भी अकेले पितृसत्ता ले जा रही है।

लोग अपनी भावना और पहचान दोनों को सामाजिक रूप से स्वीकार करने से झिझकते हैं। खास तौर पर लड़कियां और एलजीबीटीक्यू समुदाय के लोग। हमारे जीवन काल के बदलते परिवेश में भिन्न प्रकार की चुनौतियां विकसित होती हैं। इन्हीं में से कैंपस एक मुख्य जगह है जहां युवा पीढ़ी एक लंबा समय व्यतीत करती है। तो ऐसी जगह प्यार और सेक्सुअलिटी के क्या मायने हैं, इसे समझना खुद में एक चुनौती है। इसे बेहतर समझने के लिए हमने यशस्विनी से बात की है। यशस्विनी बिहार की रहने वाली है और फिलहाल जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान की पढ़ाई कर रही हैं।

"बचपन से ही मुझे छोटे बाल रखना, शर्ट–पैंट पहनना, मार्शल आर्ट्स सीखने आदि का शौक था। बड़े होकर मुझे ब्रूस ली जो बनना था। खैर राजनीतिक व सामाजिक विज्ञान में मेरी रुचि मुझे जेएनयू ले आई और यहां आते ही मेरी मुलाकात श्रीलक्ष्मी से हुई। श्री और मैं पहली बार अपने हॉस्टल के कार्यालय में मिले और श्री को वहां मुझसे पहली नजर वाला इश्क हो गया। शुरुआत में हम एक ही डॉरमेटरी में थे और चूंकि श्री केरल से है और मैं बिहार से, हमारी बमुश्किल ही कभी बात हुई। भाषा और संस्कृति में विविधता होने के कारण हम दोनों आपस में बात करने से झिझकते रहे। एक

दिन श्री ने हिम्मत करके मुझसे बात की और कुछ ही दिनों बाद अपने दिल की बात बता दी। मैंने उसकी भावनाओं का आदर किया लेकिन मैंने उसे किसी प्रेम संबंध के लिए मना कर दिया। इसका कारण यह था कि मैं एसेक्सुअल हूं और मुझे उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं था।

इसे थोड़ा विस्तार से बताऊं तो मुझे किसी भी व्यक्ति के प्रति कभी कोई यौन आकर्षण महसूस नहीं होता। अपनी सेक्सुअलिटी को समझना मेरे लिए मुश्किल नहीं था क्योंकि मैं इन विषयों पर बनी फिल्में, लेख, आदि खूब देखा पढ़ा करती थी। सोशल मीडिया पर नारीवाद से जुड़े संस्थानों को फॉलो करना और उनसे सही जानकारी प्राप्त करना भी मेरी यात्रा को सहज बनाते गए। मेरे लिए प्रेम का मतलब एक–दूसरे को सम्मान देना, संवाद करना, कविताएं लिखना, चित्र बनाना और एक–दूसरे का पूरा ख्याल रखना है। लिंग, जाति, धर्म, उम्र, आदि का इसमें कोई स्थान नहीं है। परंतु मैं श्री को धोखे में नहीं रखना चाहती थी इसलिए मैंने उसे सारी बात अच्छे से समझाई।

उसने मेरे निर्णय का सम्मान किया और हम दोनों अच्छे दोस्त बने रहे। धीरे–धीरे हम दोनों नारीवाद, पितृसत्ता, मार्क्सवाद, एलजीबीटीक्यू कम्युनिटी की समस्याओं जैसे विषयों पर संवाद करने लगे और मुझे उसके विचार आकर्षित करते रहे। हमने एक–दूसरे की सेक्सुअलिटी को अच्छे से समझने का प्रयास किया, मेरी

सोच बदलनी होगी

सीमाएं पसंद–नापसंद को अच्छे से सुनना, समझना श्री की वह खूबी थी जिसने मुझे सुरक्षा और सम्मान का अनुभव कराया और इस पूरी प्रक्रिया में मुझे श्री से प्रेम हो गया। तो कुछ ऐसे शुरू हुई हमारी प्रेम कहानी! हम पिछले छह महीनों से साथ हैं पर ऐसा लगता है जाने कितने वर्षों से एक–दूसरे को जानते हों। बिल्कुल घर जैसा अनुभव।

विश्वविद्यालय प्रशासन का भेदभावपूर्ण रवैया

हालांकि, क्वीयर प्रेमियों को समाज में जो चुनौतियां झेलनी पड़ती हैं, हमें भी झेलनी पड़ीं। जैसे होमोफोबिक टिप्पणियां, भेदभाव, परिवार में स्वीकृति न मिलना आदि, पर अभी सबसे बड़ी चुनौती थी कैंपस में साथ रहना! चूंकि जेएनयू में क्वीयर विद्यार्थियों के लिए अभी तक अलग से कोई प्रावधान नहीं हैं, हमें साथ में हॉस्टल का कमरा मिलना लगभग असंभव था। दो महीने तक आधिकारिक भागदौड़ के बाद फिलहाल हम दोनों साथ ही रह रहे हैं।

जेएनयू प्रशासन क्वीयर विद्यार्थियों की सुरक्षा और उनके लिए समावेशी माहौल बनाने में पूरी तरह से विफल रहा है। और विफलता तो तब होगी जब प्रयास हो! दरअसल प्रशासन के लिए यह कोई महत्त्वपूर्ण मुद्दा ही नहीं है। हम कैंपस के क्वीयर कलेक्टिव से जुड़े हैं और हमारी लगातार यह मांग है कि महिलाओं व क्वीयर विद्यार्थियों की सुरक्षा के लिए चयनित संस्था काम करे, जेंडर–न्यूट्रल हॉस्टलों का निर्माण हो तथा कैंपस को पूर्णतया समावेशी बनाने का प्रयास हो। देश में तो मैरिज इक्विलिटी को लेकर बहस चल ही रही है, सुप्रीम कोर्ट से हमें उम्मीद है कि वह इसे कानूनी मान्यता जरूर प्रदान करेंगे पर ऐसे में देश की तमाम यूनिवर्सिटीज और उनमें पढ़ने वाले लाखों नौजवानों से भी हमें यह अपेक्षा है कि वह सामने आएं और प्रेमहित में समर्थन करें।"

परिवार और दोस्तों की प्रतिक्रिया

"मैं सार्वजनिक रूप से अपने रिश्ते को बताने में झिझकती हूं और नहीं भी। परिवार के कुछ सदस्यों का प्रेम और विश्वास मिला है जबकि कुछ को बताने में अस्वीकृति का डर है। रही बात दोस्तों की, ज्यादातर दोस्तों ने यह जानते ही मुझे खूब प्यार दिया और अपना समर्थन जताया लेकिन कुछ दोस्त ऐसे भी थे जिन्होंने मेरा मजाक उड़ाया या मेरे प्रेम को कोई मनोरोग समझकर मुझसे दूरी बना ली। कुछ ऐसा ही अनुभव श्री का भी था। यही कारण है कि अब हम दोनों नए दोस्त बनाने में या पुराने दोस्तों को अपने रिश्ते के बारे में बताने से झिझकते हैं। हम नहीं चाहते कि कोई हमारे प्रेम को बिना समझे किसी भी प्रकार की टिप्पणी करे।"

प्रेम पाने और स्वीकारे जाने की आकांक्षा और वर्तमान स्थिति

जब कभी हमारे आस–पास घट रही घटनाओं में प्रेम या सेक्सुअलिटी का उल्लेख पाती हूं तो ज्यादातर वाकिया उदास करने वाला ही होता है। कभी कॉलेज के व्हाट्सएप ग्रुप में एलजीबीटीक्यू समुदाय से जुड़ी सूचना शेयर की जाती है तो लोगों का उस पर हँसना और उसे मीम मैटेरियल की तरह इस्तेमाल करना इतना गुस्सा पैदा करता है मन में कि सोचने पर मजबूर हो जाती हूं कि युवा पीढ़ी जो देश का भविष्य हैं कितनी शर्मनाक हरकतों से सुख पाती है। कभी कैंपस में घूमते वक्त किसी प्रेमी जोड़े को संग खिलखिलाते देख मन में सन्तोष आता तो वहीं यह भी दिखता है कि कुछ लोग एक झुंड में आकर उन्हें डरा धमकाकर भगा दे रहे हैं। हम अपने परिवार और समाज से, जो पहले से रूढ़िवादी विचारधारा के तले पिसा पड़ा है, क्या ही समर्थन की अपेक्षा करेंगे जब हमारे सहपाठियों में ही द्वेष की भावना इतनी घनी हो। विकसित शहरों के शिक्षकों में प्यार और सेक्सुअलिटी की सोच को समझती हूं तो पाती हूं कि उनके मन में सराहना का वास है किंतु पहल करने के प्रयास से बचते भी हैं।

पितृसत्तात्मक समाज में लड़कियों को तमाम पाबंदियों की भांति अपना प्रेमी चुनने का हक नहीं, बल्कि लड़कों से दोस्ती रखने को भी गलत ठहराया गया है। चूंकि मेरा मन भी इससे अछूता नहीं है, मेरे खुद के मन पर सम्पूर्ण अधिकार न होने का दोष मैं इस समाज पर ही थोपती हूं। मैं पितृसत्तात्मक समाज की उस बनावटी स्वतंत्रता पर लानत भेजती हूं जो किसी को उसकी चाह के अनुसार अभिव्यक्ति की आजादी नहीं देता। कवि मार्कण्डेय राय 'नीरव' की लिखी पंक्ति याद हो आती है, "प्रेमियों को एक कोना देने में दुनिया की सारी जमीन नप जाती है।"

hindi.feminisminindia.com से साभार

Sudha
Milk and Milk Products
वादा शुद्धता का

Empowering Women through Dairy Co-operatives

India is a leading dairy economy with a vast number of milk producers organized into mixed-gender cooperatives. **COMFED** also undertakes supportive activities of Milk Producers for income and social security which includes 4258 Women Dairy Co-operatives exclusively run by women.

COMFED giving them opportunities to emerge as leaders in taking decisions and to participate in day-to-day dairy activities to make a positive change in their lives and to their families.

Supportive Programmes & Benefits:

- **Sat Nischay-2**, an ambitious scheme of the State Government under **"Aatamnirbhar Bihar 2020-25"** with an objective to improve access to Milk Co-operatives and provide good quality Sudha Products
- Provides Balanced Cattle feed
- Artificial Insemination Programme & inclusion in Management Committee
- Cattle Insurance, Cattle Purchase on Subsidy & Vaccination
- Assistance in installation of Biogas Plant
- Around 13 lakh families are benefitted

COMFED

BIHAR STATE MILK CO-OPERATIVE FEDERATION LTD.

E-mail: comfed.patna@gmail.com • Toll Free No.: 18003456199 • www.sudha.coop

Dairy Entrepreneurship - Empowering women, empowering life

Dot Communications_Comfed_Women Empowerment_Magazine Ad_Size A4

बड़ा सवाल

लिव इन संबंध : कितनी सुरक्षित हैं महिलाएं

महाराष्ट्र से 8 जून 2023 को एक दिल दहला देने वाला समाचार आया, जिसमें एक महिला की हत्या उसके लिव इन पार्टनर ने कर दी। हत्या के बाद जो किया वह हत्या से अधिक जघन्य है। मनोज साहनी ने अपनी लिव इन पार्टनर सरस्वती वैद्य की हत्या करके उसे काटा और फिर इस घटना के साक्ष्य छुपाने के लिए शव के टुकड़ों को ठिकाने लगाने के लिए प्रेशर कुकर में उबाला।

इस घटना में महिला की और पुरुष की उम्र में बहुत अंतर है। जहां मृतक महिला की उम्र 32 के लगभग थी तो वहीं मनोज साहनी की उम्र 56 वर्ष है। यद्यपि प्यार की आजादी की बात करने वाले यह नारा लगाते रहते हैं कि "न उम्र की सीमा हो न जन्मों का हो बंधन'', परन्तु उम्र की सीमा होती ही है। प्यार को लेकर और रहने की आजादी को लेकर जो रूमानियत पैदा की गई है, जिस प्रकार से प्यार और परिवार को आमने–सामने कर दिया है, वह दुखद है और इसी आमने–सामने के संघर्ष का यह परिणाम है कि लिव इन पार्टनर्स के दिल दहला देने वाले कत्ल के मामले लगातार सामने आते रहते हैं।

"न उम्र की सीमा हो!" जैसे धारावाहिक यह रूमानियत भरते हैं कि अपने से बहुत बड़ी उम्र के साथी से प्यार करना या शादी करना गुनाह नहीं है तो वहीं लिव इन संबंधों को लेकर जो वैधता की बात है, वह भी युवाओं को इस जाल में फंसने के लिए प्रेरित करती है।

आखिर क्या है लिव इन सम्बन्ध?

लिव इन संबंधों का अर्थ होता है कि दो वयस्क अपनी मर्जी से बिना किसी औपचारिक संबंधों के एक साथ पति–पत्नी की तरह रहे हों। उनके मध्य मात्र यह सहमति है कि वह वर्तमान में जीवन साथ गुजारना चाहते हैं। जब भी कोई इस संबंध से बाहर जाना चाहे तो वह जा सकता है। हालांकि जो लोग इसे कानूनी वैधता की

बड़ा सवाल

बात करते हैं, उन्हें इस संबंध में जो निर्णय आए हैं, उनके अनुसार लिव इन में किन लोगों को कानूनी सुरक्षा मिलेगी, यह भी ध्यान में रखना चाहिए। इसके लिए दोनों का ही अविवाहित होना अनिवार्य है और दोनों का वयस्क होना अनिवार्य है। इसके साथ ही उन्होंने लंबा समय पति–पत्नी के रूप में गुजारा हो। ऐसा न हो कि वह कुछ दिन साथ रहें और फिर किसी कारण से अलग हो जाएं। और न्यायालय द्वारा बार–बार इस बात को बताया जा चुका है कि लिव इन संबंधों के बिगड़ने को बलात्कार की श्रेणी में नहीं लाया जा सकता है। हालांकि घरेलू हिंसा अधिनियम में भी पुरुष साथी के विरुद्ध शिकायत की जा सकती है।

क्या वास्तव में लिव इन में आजादी है?

आजादी का नारा देकर लिव इन में रहने की बात जो लोग करते हैं, क्या वह वास्तव में सुनिश्चित कर सकते हैं कि लड़कियों को या लड़कों को आजादी मिलती है? और क्या उन्हें वह मानसिक सुरक्षा एवं संबल प्राप्त होता है, जो उन्हें परिवार के साथ मिलता है? यह एक ऐसा प्रश्न है जिस पर लगातार बात होनी चाहिए क्योंकि लिव इन में रहने वाली लड़कियों की अंतिम मंजिल कहीं न कहीं उस युवक से शादी ही होती है। ऐसे तमाम मामले सामने आते हैं, जिसमें महिला यह शिकायत करती है कि उसके लिव इन पार्टनर ने उसे शादी एक नाम पर धोखा दिया।

यदि शादी ही करनी है, तो शादी से पहले एक साथ रहने का क्या लाभ है? क्या साथी का मानसिक दोहन इस व्यवस्था के नाम पर नहीं हो रहा है? और क्या शादी के नाम पर दबाव डालने को लेकर लड़कियों की हत्याएं अधिक नहीं हो रही हैं? यह प्रश्न इसलिए भी उठ रहा है क्योंकि हाल ही में लिव इन साथियों की हत्या के कई मामले रिपोर्ट किए गए हैं। जिनमें थाणे वाला मामला सबसे भयानक और जघन्य है। श्रद्धा वॉकर भी उसी रहने की आजादी का शिकार हुई थी। जब आफताब के घरवालों ने शादी के लिए मना कर दिया था तो वह लिव इन में रहने चले गए थे, उसके बाद उसके पिता को उसकी लाश के टुकड़े ही देखने को मिले। मुम्बई से ही एक मामला फरवरी में सामने आया था जिसमें एक नर्स मेघा तोरवी की हत्या उसके लिव इन पार्टनर हार्दिक शाह ने कर दी थी।

दिल्ली से 1 फरवरी को मामला सामने आया था, जिसमें रुकसाना नामक महिला की हत्या उसके लिव इन साथी सलमान ने कर दी थी और इतना ही नहीं उसके 5 वर्ष के बेटे की भी हत्या कर दी थी। कुछ ही दिन पहले छत्तीसगढ़ से लिव इन में हत्या का बहुत ही चौंकाने वाला मामला सामने आया था, जिसमें एक अनाथ लड़की को दानिश खान उर्फ समीर हसन ने खुद को अविवाहित बताकर प्रेम जाल में फंसाया और उसके साथ लिव इन में रहा। फिर उसे असुरक्षित तरीके से गर्भपात की दवा खिलाता रहा और फिर उसकी अस्पताल में मृत्यु हो गई थी। इसी तरह उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद में प्रॉपर्टी डीलर अनवर खान के प्रेम जाल में फंसकर उसके साथ वंचित समाज की महिला अराधना उसके साथ लिव इन में रहने लगी थी। जब उसने शादी का दबाव डाला तो उस पर धर्म परिवर्तन का दबाव डाला गया, जिसके बाद आराधना ने आत्महत्या कर ली!

विवाह से पूर्व यौन संबंधों को सहज बनाने का लाभ आखिर किसे?

विवाह से पूर्व यौन संबंधों की आजादी का लाभ आखिर किसे हो रहा है? क्या महिलाओं के जीवन की आजादी ही उनसे नहीं छिन रही है? न जाने कितने मामले ऐसे आते हैं, कि जिनमें लड़की को लड़का कई प्रकार से ब्लैकमेल करके फायदा उठाता है और इतना ही नहीं लड़कियां भी लड़कों को इन संबंधों के आधार पर ब्लैकमेल करती हैं। रोज ही ऐसे किस्से समाचार की सुर्खियाँ बनते हैं।

फिर प्रश्न यह उठता है कि परिवार और प्यार को आमने–सामने खड़ा करने का लाभ किसे हो रहा है? विवाह से होने वाली सामाजिक सुरक्षा को समाप्त कर, विवाह और यौन संबंधों को परस्पर दो अलग–अलग बातें बताने से अंततः कौन लाभान्वित हो रहा है? परिवार को समाप्त कर बाजार में अट्टहास कौन लगाता है? ऐसे तमाम प्रश्नों के उत्तर खोजने का समय आ गया है, क्योंकि परिवार की टूटन का सबसे बड़ा नुकसान और कथित रहने की आजादी अर्थात लिव में रहने का नुकसान महिलाओं को ही हो रहा है।

साभारः https://panchjanya.com

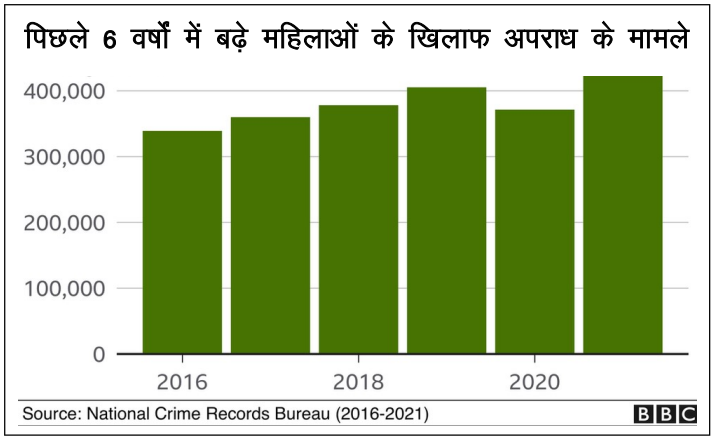

हिम्मत मत हारो

सपनों का बोझ नहीं ढो पा रही नई पीढ़ी

परिवार या माता-पिता की पसंद के कारण कई बार बच्चे ऐसा क्षेत्र चुन लेते हैं जिनमें उनकी रुचि नहीं होती। दूसरा ये कि कई बार छात्र ज्यादा महंगी फीस के बारे में सोचने लगते हैं, जिसके लिए उनके घरवालों ने काफी खर्च किया होता है। इन सबके कारण बच्चे तनाव में आ जाते हैं।

देश भर के छात्रों और अभिभावकों के लिए डॉक्टर–इंजीनियर बनने का रास्ता कोटा होकर जाता है। इसीलिए देश भर से छात्र कोटा में इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश की तैयारी के लिए पहुंचते हैं। हर साल लगभग डेढ़ से दो लाख छात्र–छात्राएं चंबल नदी के तट पर बसे कोटा का रुख करते हैं। लेकिन अब कोटा की पहचान एक बहुत ही भयावह कारण से भी बनने लगी है। इस शहर को लोग अब 'सुसाइड कैपिटल' भी कहने लगे हैं। पुलिस के अनुसार कोटा में कोचिंग विद्यार्थियों की आत्महत्या की घटनाओं में बढ़ोतरी हुई है। मनोचिकित्सक कहते हैं कि तनाव के चलते प्रतियोगी छात्र ऐसे कदम उठा रहे है।

जानकारों के मुताबिक कोटा में कोचिंग इंडस्ट्री दो हजार करोड़ रुपये से भी ज्यादा का उद्योग है, मगर अब छात्रों में बढ़ती आत्महत्या की घटनाओं ने सभी को झकझोर कर रख दिया है। कोचिंग संस्थान चलाने वालों को समझ में नहीं आ रहा है कि इन घटनाओं को कैसे रोकें। हॉस्टल एसोसिएशन के अध्यक्ष मनीष जैन बताते हैं कि हाल की घटनाओ में यह देखा गया है कि छात्र–छात्राओं ने पंखे से लटक की जान दी है। इसे रोकने के लिए हमने हैंगिग फ्री डिवाइस तैयार की है। हम चाहते कि सभी हॉस्टल इसका इस्तेमाल करें और ये महज साढ़े चार सौ रुपये का ही है। जैन बताते है कि ये डिवाइस पंखे पर लगाई जाती है। इसमें बीस किलो से ज्यादा का वजन लटकते ही पंखा नीचे की तरफ आ जायेगा और पंखे से लटकने वाला व्यक्ति या छात्र हादसे से बच जायेगा। मनीष जैन का कहना है कि उनके संगठन में दो हजार हॉस्टल पंजीकृत हैं। लेकिन पीजी (पेइंग गेस्ट) की संख्या और भी अधिक है। यहां बिहार और यूपी के छात्र–छात्राओं की संख्या अधिक है। घर से दूरी और परिवार से कई दिनों तक बात न होने पर छात्र निराश हो जाते हैं और उनके मन में अपने आप को खत्म करने के विचार आते हैं।

इस साल सिर्फ छह महीनों में कोटा में 16 बच्चों ने आत्महत्या कर ली। ये आंकड़े डराने वाले हैं। केवल मई में ही 5 छात्रों ने अपना जीवन समाप्त कर लिया। जौनपुर उत्तर प्रदेश के रहने वाले 17 साल के छात्र आदित्य ने जनवरी में फंदा लगाकर सुसाइड कर लिया। आदित्य सेठ के पिता ने बताया कि बेटा कुछ बन जाएगा, इसलिए मैंने उसे कोटा भेजा था। उससे रोज बात होती थी कभी लगा नहीं कि वह ऐसा कदम उठाएगा। मंगलवार सुबह भी उसकी बात मां से हुई थी तब भी वह नॉर्मल ही था। अगर वह तनाव में होता तो घरवालों को बताता तो सही, लेकिन उसने डेढ़ महीने में कभी कुछ नहीं कहा। उसका बड़ा भाई इंजीनियर है, वह भी कोटा से ही पढ़ा था। उसके पिता ने बताया कि जब भी बात होती और क्लास टेस्ट के बारे में पूछते तो कहता था कि अच्छा चल रहा है और अच्छा करेंगे। आदित्य करीब डेढ महीने पहले कोटा गया था। वहां वह नीट की कोचिंग कर रहा था। विज्ञान नगर में एक मकान में वह पीजी में रह रहा था। वह तीसरी मंजिल पर रहता था और दूसरी मंजिल के एक छात्र के

हिम्मत मत हारो

साथ खाना खाने के लिए जाता था। रात को जब वह आठ बजे तक बाहर नहीं आया तो उसका दोस्त उसके कमरे में गया और दरवाजा खटखटाया लेकिन वह नहीं आया। कमरे में अंधेरा था। उसके बाद उसने खिड़की से मोबाइल का टॉर्च जलाकर देखा तो आदित्य पंखे पर लटका मिला।

मेडिकल कॉलेज कोटा के मनोचिकित्सक डॉक्टर राजमल मीणा बताते हैं कि बच्चों पर पढाई के साथ कई तरह से प्रेशर होता है। इसके कारण वे आत्मग्लानी महसूस करते हैं। देशभर का बच्चा यहां आता है तो पढाई के साथ आर्थिक, सामाजिक और मानसिक प्रेशर होता है। इसके लिए या तो बच्चे को समय–समय पर मिलते रहे, बात करते रहें, उन्हें मोटिवेट करें और उन पर सफलता के लिए अधिक मेहनत करने के लिए नहीं कहें। कुल मिलाकर उन्हें एक अच्छा वातावरण दें ताकि बच्चों के कोमल मन में यह बात न बैठ जाए कि ये नहीं तो कुछ और कर लेंगे। तभी सुसाइड की मानसिकता से बाहर आ सकते हैं।

कोटा में एक कोचिंग संस्थान के प्रमोद महेश्वरी बताते हैं कि हम छात्रों के सामने डॉक्टर और इंजीनियरिंग के अलावा भी विकल्प रखते हैं, ताकि छात्र अगर इन क्षेत्र में सफल नहीं हो पाता तो उसके पास एक अन्य विकल्प भी हो और उसे असफल होने की निराशा भी न हो। कोटा मेडिकल कॉलेज में मनोचिकित्सा में सीनियर प्रोफेसर डॉक्टर भरत सिंह शेखावत ने कहा, ''छात्र–छात्राओं की आत्महत्या जैसे कदम उठाने के पीछे कई कारण हैं। इन कारणों की तह में जाकर बहुत कुछ किया जा सकता है। उनके पास अब भी हर दिन दो–तीन विद्यार्थी तनाव और उलझन की शिकायत लेकर आते हैं।'' डॉक्टर शेखावत कहते हैं कि ऐसे माहौल में यह जरूरी है कि छात्र को कोई ऐसा मिले जिससे वो दिल खोल कर अपनी बात कह सके। परिवार या माता–पिता की पसंद के कारण कई बार छात्र ऐसा क्षेत्र चुन लेते हैं जिनमें उनकी रुचि नहीं होती। दूसरा ये कि कई बार छात्र ज्यादा महंगी फीस के बारे में सोचने लगते हैं, जिसके लिए उनके घरवालों ने काफी खर्च किया होता है। इन सबके कारण बच्चे तनाव में आ जाते हैं। डॉक्टर शेखावत का कहना था कि कोचिंग संस्थानों को प्रवेश के वक्त छात्र को जांचना चाहिए कि वे उस क्षेत्र के लिए सही हैं या नहीं। अगर छात्र की उसमें रुचि न हो तो वो उन्हें दाखिला न दें या कोई और विकल्प बताएं।

श्रोत : www.bbc.com/hindi@www.youthkiawaaz.com

15–35 की उम्र में सबसे ज्यादा खुदकुशी

महिलाओं के मुकाबले पुरुषों में आत्महत्या की दर अत्यधिक

पिछले साल अगस्त में हरियाणा के अंबाला का एक मामला सामने आया था जिसमें एक युवक ने परिवार के पांच सदस्यों को मारकर खुदकुशी कर ली थी। युवक ने पहले अपने माता–पिता को और फिर अपने पत्नी और बच्चों को भी मार डाला। जांच के बाद पता चला कि मामला आर्थिक तंगी का था। कुछ ऐसी ही कहानी राजस्थान के धौलपुर में रह रहे युवक की है। युवक कंपाउंडर भर्ती की तैयारी कर रहा था और परीक्षा में सेलेक्ट नहीं होने के कारण खुदकुशी कर ली।

भारत में ऐसे टूटते लोग और बिखरते परिवार की तमाम कहानियां हैं। साल दर साल बढ़ते खुदकुशी के आंकड़े डराने लगे हैं। भारत में पारिवारिक समस्या, अकेलापन, आर्थिक स्थिति और नशे की लत के चलते आत्महत्या के मामले बढ़ रहे हैं। वैसे, तो हर उम्र के व्यक्तियों में आत्महत्या की प्रवृत्ति देखी जा रही है, परंतु 15 से 35 वर्ष की आयु के व्यक्तियों में इसकी संख्या अधिक सामने आती है। आत्महत्या करने के कई कारण हैं, परंतु भारत में इसके मुख्य कारणों में नौकरी का नहीं मिलना या नौकरी का छूट जाना, सामाजिक तौर पर मानसिक तनाव, बच्चों में पढ़ाई का तनाव,

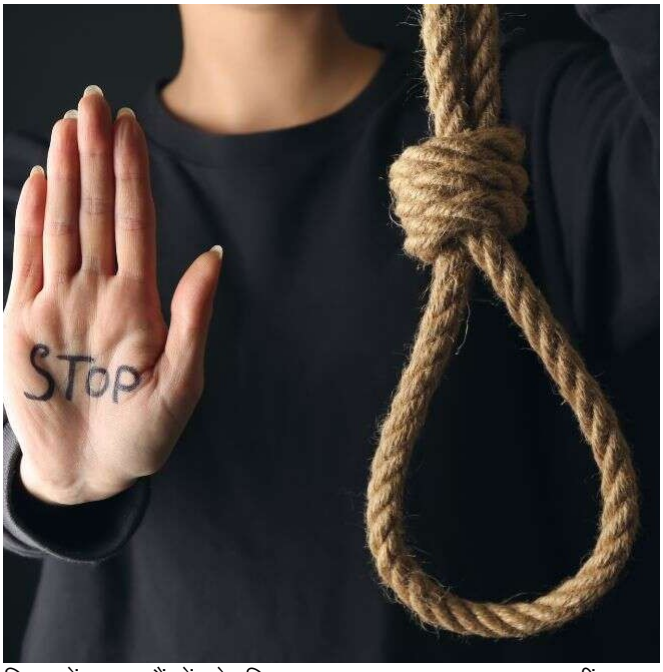

किसानों द्वारा बैंकों से लिए गए ऋण का समय पर नहीं चुका पाना, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों के चलते स्त्रियों पर मानसिक तनाव अथवा छेड़छाड़ या दुष्कर्म के बाद समाज के तानों से घबराकर भी आत्महत्या कर लेना एक मुख्य कारण है।

पिछले कुछ सालों में, भारत में ही नहीं बल्कि दुनिया भर में खुदकुशी की घटनाओं में बहुत तेजी से वृद्धि हुई है। इन सब में चौंकाने वाली बात तो यह है कि महिलाओं की तुलना में

हिम्मत मत हारो

आत्महत्या करने की दर पुरुषों की ज्यादा है और अब बच्चे भी इसकी चपेट में आने लगे हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार, हर 4 मिनट में एक व्यक्ति आत्महत्या करता है। हर साल लगभग 8 लाख से ज्यादा लोग अवसाद यानी डिप्रेशन में आत्महत्या कर लेते हैं, जिसमें अकेले 17 प्रतिशत भारतीय हैं जबकि इससे भी अधिक संख्या में लोग आत्महत्या की कोशिश करते हैं।

NCRB की एक रिपोर्ट के अनुसार देश में सुसाइड के मामलों में तेजी से वृद्धि हुई है। 2021 में भारत में कुल 1,64,033 लोगों ने आत्महत्या की जिसमें सबसे ज्यादा सुसाइड के मामले महाराष्ट्र राज्य में दर्ज किए गए। महाराष्ट्र के अलावा तमिलनाडु और मध्यप्रदेश में आत्महत्या के मामले में काफी बढ़त देखने को मिली है। रिपोर्ट में आत्महत्या के अलग–अलग कारणों के बारे में भी बताया गया जिसमें पारिवारिक कलह सबसे बड़ी वजह बताई गई। मानसिक बीमारी, नशे की लत, लव लाइफ से जुड़ी दिक्कतें भी आत्महत्या की वजहें बताई गई है। रिपोर्ट के अनुसार केवल पांच राज्य महाराष्ट्र, तमिलनाडु, मध्य प्रदेश, पश्चिम बंगाल और कर्नाटक में सुसाइड के 50.4 प्रतिशत मामले दर्ज किए गए। आत्महत्या के बढ़ते मामलों को रोकना देश के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है। इसे रोकने के लिए एक व्यक्ति खुद सबसे अहम कड़ी होता है, क्योंकि वह समाज के एक सदस्य के रूप में अपनी सजगता से खुद के साथ अन्य लोगों को भी बचा सकता है। इस बीच सुसाइड टेंडेंसी को लेकर लोगों के मन में कई सवाल उठते हैं। आत्महत्या की प्रवृत्ति क्या एक मनोरोग है, जिसका इलाज होना चाहिए? हमारे पढ़े लिखे और शिक्षित समाज में, खासकर युवाओं में इसकी बढ़त क्यों देखी जा रही है।

सर गंगाराम अस्पताल की कंसलटेंट मनोचिकित्सक आरती आनंद कहती हैं कोई भी व्यक्ति सुसाइड के बारे में तभी सोचता है जब उन्हें जीने की कोई उम्मीद नजर नहीं आती। आत्महत्या का मामला दुखद तो है, लेकिन हर मामले में कुछ न कुछ रहस्य छिपा होता है। हालांकि हर मामले में एक समानता जरूर नजर आती रही है और वह है निराशा की गहरी भावनाएं। कई बार लोग अपनी दिक्कतों से इतने तंग आ जाते हैं कि उन्हें आगे का कोई रास्ता नजर नहीं आता है। उन्हें लगने लगता है कि वह जिंदगी और हालात से पैदा हुई चुनौतियों का सामना नहीं कर पाएंगे। ऐसे में सबसे जरूरी है कि कोई ऐसा व्यक्ति आपके साथ हो जो आपकी बातों को सुन और समझ सके। जब आपका दोस्त या परिवार का कोई सदस्य अपनी दिक्कतें बता रहा हो तो हमें उनकी आलोचना करने के बजाय बात सुननी चाहिए। एक्सपर्ट ने डिप्रेशन के लक्षण के बार में बात करते हुए कहा कि इसका सबसे सामान्य लक्षण है अचानक बात करना बंद कर देना। हमने कई ऐसे मामले देखे हैं जहां डिप्रेशन से जूझ रहा व्यक्ति खुद को कॉर्नर कर देता है। अगर आप देख रहे हैं कि आपका करीबी दो हफ्तों से ज्यादा गुमसुम है तो उनसे बात करने की कोशिश करनी चाहिए। सुसाइड के ख्याल से पहले सामान्य तौर पर बच्चे या बुजुर्ग खाना नहीं खाना चाहते हैं। कम बोलना, कम खाना, अपनी किसी ना किसी बातों से जाहिर कर देना कि उन्हें सुसाइड के ख्याल आ रहे हैं, दुखी रहना सामान्य लक्षण है जिसे हम इग्नोर कर देते हैं।

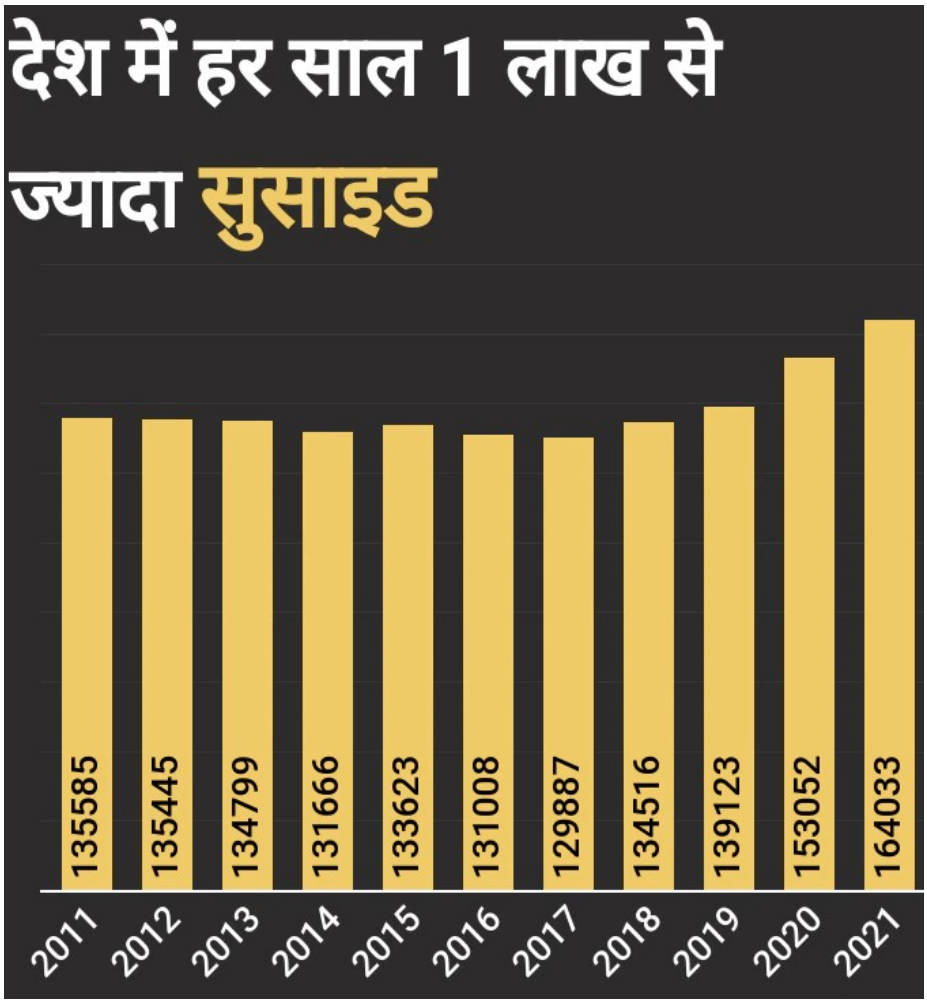

जीवन की सच्चाई

देखते ही देखते जवान मां–बाप बूढ़े हो जाते हैं..

सुबह की सैर में,
कभी चक्कर खा जाते हैं,
सारे मोहल्ले को पता है,
पर हमसे छुपाते हैं...

दिन प्रतिदिन अपनी,
खुराक घटाते हैं,
और तबियत ठीक होने की,
बात फोन पे बताते हैं...

ढीले हो गए कपड़ों,
को टाइट करवाते हैं,
देखते ही देखते जवान,
माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...!

किसी के देहांत की खबर,
सुन कर घबराते हैं,
और अपने परहेजों की,
संख्या बढ़ाते हैं,

हमारे मोटापे पे,
हिदायतों के ढेर लगाते हैं,
'रोज की वर्जिश' के,
फायदे गिनाते हैं,

'तंदुरुस्ती हजार नियामत',
हर दफे बताते हैं,
देखते ही देखते जवान,
माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं..

हर साल बड़े शौक से,
अपने बैंक जाते हैं,
अपने जिन्दा होने का,
सबूत देकर हर्षाते हैं...

जरा सी बढ़ी पेंशन पर,
फूले नहीं समाते हैं,
और फिक्स्ड डिपोजिट, रिन्ऊ करते
जाते हैं...

खुद के लिए नहीं,
हमारे लिए ही बचाते हैं,
देखते ही देखते जवान,
माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

चीजें रख के अब,
अक्सर भूल जाते हैं,
फिर उन्हें ढूँढने में,
सारा घर सर पे उठाते हैं...

और एक–दूसरे को,
बात–बात में हड़काते हैं,
पर एक–दूजे से अलग,
भी नहीं रह पाते हैं...

एक ही किस्से को,
बार–बार दोहराते हैं,
देखते ही देखते जवान,
माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं...

चश्मेसे भी अब,
ठीक से नहीं देख पाते हैं,
बीमारी में दवा लेने में,
नखरे दिखाते हैं...

एलोपैथी के बहुत सारे,
साइड इफेक्ट बताते हैं,
और होमियोपैथी–आयुर्वेदिक की ही रट
लगाते हैं..

जरूरी ऑपरेशन को भी,
और आगे टलवाते हैं,
देखते ही देखते जवान
माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं..

उड़द की दाल अब,
नहीं पचा पाते हैं,
लौकी तुरई और धुली मूंगदाल,
ही अधिकतर खाते हैं,

दांतों में अटके खाने को,
तिली से खुजलाते हैं,
पर डेंटिस्ट के पास,
जाने से कतराते हैं,

'काम चल तो रहा है',
की ही धुन लगाते हैं..
देखते ही देखते जवान,
माँ–बाप बूढ़े हो जाते हैं..

हर त्यौहार पर हमारे,
आने की बाट देखते हैं,
अपने पुराने घर को,
नई दुल्हन सा चमकाते हैं..

हमारी पसंदीदा चीजों के,
ढेर लगाते हैं,
हर छोटी बड़ी फरमाईश,
पूरी करने के लिए,
माँ रसोई और पापा बाजार,
दौड़े चले जाते हैं..

पोते–पोतियों से मिलने को,
कितने आंसू टपकाते हैं..
देखते ही देखते जवान,
माँ–बाप बूढ़े हो जाते है।

कवि : अनाम

आज का युवा : विशेषज्ञों की राय

बाजारवाद से बचना होगा युवाओं को

शरद कुमारी, प्रोग्राम मैनेजर, एक्शन एड

''समाज सेवा के क्षेत्र में आने वाले युवाओं के लिए आज बाजारवाद सबसे बड़ी चुनौती है। अपनी जरूरतों को पूरा करने की होड़ में लगी पीढ़ी पर परिवार और समाज का भी अत्यधिक दबाव है। ऐसे में जो युवा संवेदनशील होते हैं और धरातल से जुड़कर काम करना चाहते हैं, वे भी कहीं न कहीं आर्थिक और सामाजिक बाधाओं के कारण आगे नहीं बढ़ पाते हैं।'' समाजसेवी और एक्शन एड की प्रोग्राम मैनेजर शरद कुमारी जब ये बातें कहती हैं तो उनके चेहरे पर चिंता की लकीरें फैल जाती हैं। वे साफ तौर पर कहती हैं कि आज की पीढ़ी पिछली पीढ़ियों की तुलना में कहीं अधिक तेज हैं और चौबीसों घंटे सूचनाओं से घिरी हैं। उनके पास सीखने के तेज और आकर्षक साधन हैं। ऐसे में उन्हें सही और गलत का फर्क समझाना बड़ी चुनौती है, और उन्हें सही मार्गदर्शन देने की जिम्मेदारी सरकार, समाज और परिवार की है। हमने अपने संघर्षों से जो कुछ पाया है, उसे सहेजने और आगे बढ़ाने का दायित्व आज की युवा पीढ़ी के कंधों पर है लेकिन उन्हें सही राह दिखाने की महती जिम्मेदारी हम सबको मिलकर निभानी होगी।

युवा महिलाओं पर सांस्कृतिक दबाव

शरद जी कहती हैं कि समाज सेवा के क्षेत्र में काम करते हुए उन्होंने देखा है कि लड़कियां बाहर निकलना चाहती हैं, दुनिया देखना चाहती हैं लेकिन परिवार उन्हें इसकी इजाजत नहीं देता है। शादी के पहले परिवार उन्हें अकेली लड़की होने का भय दिखाता है तो शादी के बाद मायके और ससुराल की इज्जत बनाए रखने का बोझ थोप कर उन्हें घर में कैद कर देता है। दुखद तो यह है कि आज धर्म और संस्कृति के नाम पर पढ़ी–लिखी लड़कियों को भी बहलाया जा रहा है। शादी के पहले अच्छी–खासी नौकरी कर रही बहुत सारी लड़कियां शादी के बाद अपनी नौकरी स्वेच्छा से छोड़कर पति को परमेश्वर मानने की सोच को सही ठहराने लगी हैं और घरेलू हिंसा को नए रूप में स्वीकार करने लगी हैं। बाजार में औरतों को केवल देह की कीमत समझाई जा रही है, दिमाग की नहीं, और यह स्थिति घातक हो सकती है।

समाज सेवा में युवाओं की भूमिका

पहले की तुलना में आज बहुत अंतर आया है, खासकर समाज सेवा के क्षेत्र में हम देखते हैं कि जो बच्चे डिजिटल दुनिया को स्वस्थ तरीके से सीख पा रहे हैं, वे स्वस्थ परिवर्तन के वाहक बन रहे हैं। उनकी मदद से समुदायों में बदलाव को तेजी से लाया जा सकता है। बाल विवाह, बाल मजदूरी के अभिशाप को बताने और शिक्षा के महत्व को दिखाने के लिए आज इंटरनेट पर अच्छी सामग्री उपलब्ध है, जिसका फायदा बच्चे भी उठा रहे हैं और अपने माता–पिता व समाज को जागरूक कर रहे हैं। हालांकि बहुत सारे लड़के–लड़कियां समाज सेवा के क्षेत्र में इसलिए आते हैं क्योंकि उन्होंने इसकी पढ़ाई की हुई होती है। वे एक पेशेवर की तरह इस क्षेत्र में आते हैं। आज मेरे साथ कई कार्यकर्ता हैं जो बाल विवाह पर काम कर रहे हैं लेकिन उनमें से कई लोग इस समस्या को जड़ से नहीं समझ पाते हैं। कई बार वे भी आम लोगों की भाषा में ही बात करने लगते हैं। फिर भी उनके बीच में ही कुछ ऐसे युवा निकलते हैं जो इन समस्याओं के प्रति संवेदनशील होते हैं और वे भविष्य के सामाजिक कार्यकर्ता के तौर पर सामने आते हैं। ऐसे युवा दिल से सोचते हैं और लोगों से जुड़ पाते हैं।

आज का युवा : विशेषज्ञों की राय

स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता नहीं

डॉ सुमिता सिंह, इतिहास विभाग
जे.डी. वीमेंस कॉलेज, पटना

पिछले 26 वर्षों से कॉलेज में पढ़ा रहीं प्रोफेसर डॉ सुमिता सिंह ये स्वीकार करती हैं कि आज की लड़कियां आत्मविश्वास से लबरेज हैं और उनकी आंखों में अपने भविष्य को लेकर बड़े–बड़े सपने हैं। सुमिता जी बताती हैं कि इन सालों में युवा पीढ़ी की सोच और प्रदर्शन में अभूतपूर्व बदलाव आया है। कहती हैं, ''आज भी लड़कियां घर का सारा काम करके कॉलेज में क्लास करने आती हैं, लेकिन अब उनका लक्ष्य निर्धारित होता है, वो जानती हैं कि उन्हें किस दिशा में आगे बढ़ना है, जो पहले नहीं था। हरेक लड़की अब कुछ न कुछ बनना चाहती हैं, प्रयास करना चाहती हैं।''

डॉ सुमिता मानती हैं कि शिक्षा का माहौल बनने और सरकार द्वारा लड़कियों के रोजगार के लिए किए गए प्रयासों का भी लड़कियों के हौसले पर बड़ा प्रभाव पड़ा है। आज बिहार में पुलिस में सबसे अधिक महिलाएं हैं। शिक्षण के क्षेत्र में भी अवसर बढ़े हैं। कुल मिलाकर युवा लड़कियां एक सकारात्मक बदलाव की ओर बढ़ रही हैं।

हालांकि कुछ मामलों में उन्हें लगता है कि आज की पीढ़ी स्वतंत्रता और स्वच्छंदता के बीच का अंतर नहीं समझ पाती है। कॉलेज में अनुशासन और शिक्षकों के प्रति सम्मान में कमी आई है। इसके पीछे वे स्कूली शिक्षा और घर के माहौल को बड़ा कारण मानती हैं। स्कूलों में बच्चों को जिस तरह से अनुशासन का पाठ पढ़ाया जाता है और घर के भीतर उन्हें नैतिकता तथा सदाचरण की जो शिक्षा दी जाती है, उसका प्रभाव बच्चों के पूरे व्यक्तित्व पर पड़ता है। आज युवाओं की एक बड़ी संख्या अपने घरों से दूर हॉस्टल में रहकर पढ़ाई करती है, और इसमें लड़कियां भी शामिल हैं। डॉ सुमिता जी को लगता है कि कहीं न कहीं पटना जैसे बड़े शहरों में हॉस्टल के माहौल और खुलेपन ने लड़के–लड़कियों में स्वच्छंदता का भाव बढ़ाया है। देर रात तक फोन पर बात करने, सिगरेट पीने और दूसरों के प्रति असम्मान दिखाने की प्रवृत्ति आम है। लड़कियों में आजाद रहने की सोच उन्हें कई बार गलत दिशा में ले जाती है। उनमें भटकाव आ जाता है, और इन सबमें सोशल मीडिया आग में घी डालने का काम करता है। युवाओं को भटकाने और उन्हें साइबर ठगी का शिकार बनाने में सोशल मीडिया अहम भूमिका निभा रहा है। अच्छा दिखने और अपनी निजी बातों को सोशल मीडिया पर साझा करने की सनक अक्सर लड़कियों के लिए आत्मघाती बन जाती है। इन सब बातों से इन युवाओं के माता–पिता को तो परेशानी झेलनी ही पड़ती है, छोटे शहरों के लोगों की बेइज्जती भी होती है।

डॉ सुमिता कहती हैं कि आज की लड़कियों में विद्रोही प्रवृत्ति का जन्म हुआ है। अपने साथ हुए अन्याय के खिलाफ वे बेहिचक आवाज उठाती हैं। कॉलेज परिसर हो या बाजार, प्रतिउत्तर देने से वे कतराती नहीं हैं। अपने करियर को लेकर, जिंदगी के फैसलों को लेकर भी वे पहले से अधिक जागरूक हुई हैं और उनमें आत्मविश्वास बढ़ा है। आज लड़कियां रोजगार के पारंपरिक क्षेत्रों के अलावे नए क्षेत्रों में भी आगे बढ़ रही हैं, कोई इवेंट मैनेजमेंट का काम कर रही है तो कोई अपना स्टार्ट अप चला रही है। पढ़ाई करने के दौरान अपना खर्चा खुद उठाने के लिए लड़कियां पार्ट टाइम नौकरी भी कर रही हैं। डॉ सुमिता कहती हैं, ''बदलाव क्रांतिकारी तरीके से हो रहे हैं तो हमें भी उस बदलाव के साथ चलने के लिए तैयार होना होगा। कॉलेज स्तर पर भी नैतिकता का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए लेकिन सबसे बड़ी भूमिका माता–पिता की है। उन्हें सतर्क और सचेत रहना होगा, तभी हमारी नई पौध लहलहाएगी।

लीक से हटकर : बिहार के युवा

देश सेवा का सशक्त माध्यम है राजनीति

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मिरा मक्सद नहीं
मेरी कोशिश है कि सूरत बदलनी चाहिए

ये पंक्तियां सटीक साबित होती हैं उन जननेताओं पर जो वास्तव में परिवर्तन की पताका लेकर आगे बढ़ते हैं। आज की युवा पीढ़ी को यही नेतृत्व प्रदान कर रहे हैं डॉ गुरु प्रकाश पासवान। बिना किसी ताम–झाम के अपने काम से देश का नाम आगे बढ़ा रहे गुरु प्रकाश उन युवाओं के लिए प्रेरणा हैं जो राजनीति को देश सेवा का माध्यम बनाना चाहते हैं। भारतीय जनता पार्टी के सबसे युवा राष्ट्रीय प्रवक्ता डॉ गुरु प्रकाश पासवान आने वाले समय में नेतृत्व की नई परिभाषा गढ़ने के लिए तैयार हैं।

डॉ गुरु प्रकाश कहते हैं कि यह वर्ष भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे कहते हैं, ''हम विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवथा हैं और हम जल्दी ही विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर अग्रसर हैं। कोविड के दौरान भारत ग्लोबल फार्मेसी के तौर पर उभर कर सामने आया। इंटरनेशनल योगा डे जब हम कहते हैं तो 200 से ज्यादा देश उसको अनुमोदित करते हैं। इंटरनेशनल डे ऑफ मिलेट हमारे कहने पर पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। विश्व में हमारा उभरता अस्तित्व और हमारी नीतियों और नेतृत्व के प्रति बढ़ती स्वीकार्यता आज साफ तौर पर दिख रही है।''

युवाओं की दृष्टि से देखा जाए तो हमारी बढ़ती हुई अर्थव्यवस्था में कोई छूट न जाए, ये तय करना सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। इसे आधार मानते हुए डॉ पासवान कहते हैं, ''आर्थिक क्षमता प्राप्त करने के साथ–साथ सामाजिक विषमताओं को भी दूर करना होगा। वृद्धि की दर समावेशी कैसे हो, यह तय करना होगा। युवाओं के भी कई वर्ग हैं– शहरी युवा, ग्रामीण युवा, उत्तर–पूर्व के युवा, आदिवासी युवा। हर वर्ग, हर क्षेत्र के युवाओं की प्राथमिकताएं, उनका सपना, उनकी लड़ाई और उनकी समस्याएं अलग–अलग हैं। दक्षिण के मुद्दे उत्तर के मुद्दों से अलग हैं, और इसी प्रकार अलग–अलग क्षेत्र का युवा अलग–अलग मुद्दों का सामना करता है। इस बढ़ती अर्थव्यवस्था में, इन उपलब्धियों में भारत अपने आप को कहां खड़ा करे, यह सवाल आज भारत के युवाओं के बीच सबसे बड़ा है।''

युवा क्यों आएं राजनीति में

डॉ गुरु प्रकाश पासवान कहते हैं, ''आज भारत की आबादी विश्व की सबसे युवा आबादी है, तो इस दृष्टि से भी युवाओं के कंधों पर महती जिम्मेवारी है। मुझे यह कहते हुए अत्यंत गर्व का अनुभव होता है कि आज मैं विश्व के सबसे बड़े राजनीतिक दल का सबसे युवा राष्ट्रीय प्रवक्ता हूं। राजनीति देश की सेवा करने का बड़ा ही सशक्त माध्यम है, लेकिन राजनीति में आप किस मंशा से आ रहे हैं, यही इस बात को तय करता है कि राजनीति में आप कितनी दूर तक जाएंगे। चाहे आप अल्प अवधि के लिए राजनीति में आएं अथवा दीर्घ अवधि के लिए, परिवर्तन ही इसका उद्देश्य होना चाहिए।'' उनके मुताबिक, आज चुनौतियों के साथ–साथ अवसर भी हैं। अगर आपमें प्रतिभा है और कार्य करने की क्षमता है तो किसी भी संगठन में आपके सामने आगे आने के पूरे अवसर हैं। डॉ. पासवान कहते हैं कि प्रतिभा, संयम और विनम्रता कभी बेकार नहीं जाती और ये तीनों चीजें किसी भी दल और संगठन में आपके आगे बढ़ने के रास्ते तय करती हैं। ये चीजें विरोधियों की भीड़ में भी आपको आगे रखने का काम करती हैं। शर्त इतनी ही है कि आपको समय देना होगा। अगर आप लंबे समय की राजनीति के बारे में सोच रहे हैं तो इसमें कई बार आपको नीलकंठ भी बनना पड़ता है। मेरा स्पष्ट रूप से ये मानना है कि आज की तारीख में भूमि समतल हुई है, अवसर सबके पास मौजूद हैं। प्रतिभा, संयम और विनम्रता, इन तीन स्तंभों पर यदि आप टिके रहें तो निश्चित रूप से राजनीति में बेहद सफल हो सकते हैं।

डॉ गुरु प्रकाश पासवान, राष्ट्रीय प्रवक्ता, भारतीय जनता पार्टी

लीक से हटकर : बिहार के युवा

गरीब बच्चों में आत्मविश्वास भर रहे शरद

गरीब, सामान्य परिवार से दुनिया की टॉप यूनिवर्सिटीज में पढ़ने जा रहे दर्जनों बच्चों के उदाहरण गूगल करने पर आपको मिल जाएंगे। आप सोच रहे होंगे कि ये कैसे संभव हो रहा है? दरअसल, इस तरह के बच्चों को ट्रेनिंग देकर टॉप यूनिवर्सिटीज में स्कॉलरशिप पर दाखिला दिलवाने का काम कर रही है 'डेक्सटेरिटी ग्लोबल ग्रुप'। इसके फाउंडर और सीईओ हैं शरद विवेक सागर।

2020–21 में शरद को हार्वर्ड यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन का प्रेसिडेंट चुना गया था। 50 से ज्यादा देशों के 1200 से अधिक स्टूडेंट्स ने शरद को वोट दिया। हार्वर्ड के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ जब किसी भारतीय को प्रेसिडेंट चुना गया। शरद कहते हैं, ''बिहार से होने की वजह से कभी ताना तो नहीं सुनना पड़ा, लेकिन कई लोग कहते थे– अरे! एक बिहारी की इतनी अच्छी इंग्लिश कैसे हो सकती है? मैं उनसे कहता था– नहीं, बिहार के लोग भी अच्छी अंग्रेजी बोल सकते हैं।'' शरद के नाम दर्जनों रिकॉर्ड दर्ज हैं। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा से मिलने से लेकर फोर्ब्स 30 अंडर 30 और कौन बनेगा करोड़पति में बतौर एक्सपर्ट शामिल होने तक। ये उपलब्धियां शरद ने 30 साल से कम उम्र में हासिल की हैं।

शरद विवेक सागर

हालांकि इस सफर में शरद पर गमों का पहाड़ भी टूटा। वे बताते हैं, ''16 साल की उम्र में मां को खो दिया। जब 24 साल का हुआ, तो भाई की भी मौत हो गई। वो एम.आई.टी. बोस्टन जाने वाले बिहार के पहले स्टूडेंट थे। उन्हें दूसरा 'रामानुजन' भी कहा जाता है। शरद को भी लोग 21वीं सदी के 'विवेकानंद' के तौर पर जानते हैं। पूछने पर मुस्कुराते हुए कहते हैं, ''मुझे ऐसा बिल्कुल नहीं लगता है। हां, उन 100 लोगों में अपनी जगह बनाने की कोशिश कर रहा हूं, जिन्हें लेकर स्वामी विवेकानंद कहते थे कि मुझे ऐसे

अब तक गरीब बच्चों को 114 करोड़ की स्कॉलरशिप दिलवा चुके हैं बिहार के शरद विवेक सागर।

2020–21 में शरद को हार्वर्ड यूनिवर्सिटी स्टूडेंट यूनियन का प्रेसिडेंट चुना गया था। हार्वर्ड के इतिहास में पहली बार किसी भारतीय को मिला यह स्थान।

30 साल से कम उम्र में ही दर्जनों उपलब्धियों को किया अपने नाम।

लीक से हटकर : बिहार के युवा

100 लोग दे दो, मैं दुनिया का कायाकल्प कर दूंगा।''

शरद स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस जैसे विचारक. ों को फॉलो करते हैं। उनके घर की दीवारों पर इन विचारकों के विचार लिखे हैं। शरद बताते हैं, ''देश के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद के गांव जीरादेई में पैदा हुआ। यह सीवान जिला में आता है। पापा स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की ग्रामीण शाखा में थे। गांव में उस वक्त कोई अच्छा स्कूल नहीं था, तो 12 साल की उम्र तक किसी स्कूल में एडमिशन नहीं हुआ। मम्मी–पापा को मेरी पढ़ाई–लिखाई की चिंता होती थी, इसलिए घर पर ही न्यूजपेपर, मैगजीन आने लगा। न्यूजपेपर एक दिन पुराना होता था। पापा की पोस्टिंग बिहार के छपरा, सीवान, मीरगंज जैसे शहरों में होती रहती थी। जब 12 साल का था, तो मम्मी के साथ पटना शिफ्ट हो गया। इसके बाद मेरा स्कूल में एडमिशन हुआ। ये 2002–03 की बात है। उसके बाद 12वीं तक की पढ़ाई यहीं हुई। पापा हफ्ते में एक दिन मिलने के लिए पटना आते थे। जब हाईस्कूल में था तो सोशल सब्जेक्ट्स, क्विज, डिबेट्स में काफी दिलचस्पी होने लगी। न्यूजपेपर में पढ़ता था कि कोई बच्चा विदेश पढ़ने जा रहा है, किसी ने इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन जीता है, तो मैं सोचता था कि ये बच्चे विदेश पढ़ने कैसे गए होंगे? क्या प्रोसेस होता है? लगता था कि मैं भी इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन के लिए जाऊं। इन सारी चीजों को मैं डायरी में लिख लेता था। 2008 का साल बीत रहा था। विदेश में पढ़ने के लिए जाने की तैयारी करने लगा। कॉम्पिटिशन्स में पार्टिसिपेट करने लगा। ज्यादातर बच्चे बड़े घरों के ही होते थे। सामान्य बच्चों को टॉप यूनिवर्सिटी, कॉलेज का नाम तक पता नहीं होता था, तैयारी करना तो दूर की बात है।''

न्यूजपेपर में पढ़ता था कि कोई बच्चा विदेश पढ़ने जा रहा है, किसी ने इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन जीता है, तो मैं सोचता था कि ये बच्चे विदेश पढ़ने कैसे गए होंगे? क्या प्रोसेस होता है? लगता था कि मैं भी इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन के लिए जाऊं। इन सारी चीजों को मैं डायरी में लिख लेता था।

16 साल की उम्र में शरद ने 'डेक्सटेरिटी ग्लोबल ग्रुप' नाम से एक एनजीओ की शुरुआत की थी। वो कहते हैं, ''सामान्य बच्चों को भी बेहतर शिक्षा मिले। इस पर काम करने लगा, लेकिन अगले साल यानी 2009 में मां का निधन हो गया। वो मुझे कहा करती थीं– देश के लिए, समाज के लिए काम करूं। यही सोचकर मैं अपने नए सफर पर निकल पड़ा। घर पर खाना बनाने के लिए मेड आने लगी। 2012–13 में 12वीं के बाद अमेरिका के टफ्ट्स यूनिवर्सिटी से 4 करोड़ की स्कॉलरशिप मिली। वहां ग्रेजुएशन करने चला गया। 2016 में 160 साल के इतिहास में पहला इंडियन ग्रेजुएट स्पीकर बना। कह सकता हूं कि मेरी और मेरे एनजीओ की ग्रोथ एक साथ हुई। मुझे आज भी याद है कि जब पापा को यूनिवर्सिटी में बुलाया गया था, तो जवाब में उन्होंने कहा, मैं बिहार से ही अपने बेटे को बोलते हुए सुन लूंगा। ये भी दिलचस्प है कि मैंने 200 से ज्यादा कॉम्पिटिशन जीते हैं। 6 देशों में भारत का प्रतिनिधित्व किया है, लेकिन आज तक ऐसा नहीं हुआ कि मैं स्टेज पर हूं और पापा सामने बैठे हों। मैं इस मामले में सौभाग्यशाली था कि घर वालों ने कभी ये नहीं कहा कि तुम डॉक्टर बनो, इंजीनियर बनो। बस इतना कहते थे कि शिक्षा से अपने समाज के लिए जो कर सकते हो, करो। विचार बड़ा होता है, तभी काम बड़ा हो सकता है। अपने काम से बड़ा कोई नहीं है। सचिन तेंदुलकर मास्टर ऑफ क्रिकेट हैं, लेकिन वो हमेशा सर्वेंट ऑफ क्रिकेट रहे हैं। 2016 का साल था। मेरा ग्रेजुएशन कम्प्लीट हो चुका था। उधर उस वक्त के अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा का दूसरा कार्यकाल खत्म हो रहा था। उन्होंने दुनियाभर के 200 यंग लीडर्स को बुलाया था, जिसमें मैं भी एकमात्र भारतीय था। हमारी 90 मिनट की बातचीत हुई थी।''

2016 में भी शरद को हार्वर्ड में एडमिशन के लिए ऑफर आया था, लेकिन ग्रेजुएशन कम्प्लीट करने के बाद वो भारत लौट आए। शरद बताते हैं, लौटने के बाद अपने एनजीओ के लिए काम करने लगा। विदेश पढ़ने के लिए जाने का सपना भी इसीलिए था कि अच्छी चीजें सीखकर वापस देश लौट आऊं। देश के बच्चों को एजुकेट करूं। फिर 2020 में जब पूरी दुनिया कोरोना की वजह से ऑनलाइन मोड में आ गई थी, तब मैंने हार्वर्ड में एडमिशन ले लिया। 2021 में पढ़ाई पूरी करने के बाद फिर से अपने देश लौट आया हूं। अब तक मेरे संस्थान के जरिए स्टूडेंट्स को दुनियाभर की अलग–अलग टॉप यूनिवर्सिटीज से 114 करोड़ की स्कॉलरशिप मिल चुकी है। गरीब परिवार के बच्चे भी विदेशों में जाकर पढ़ रहे हैं। हर साल 70 लाख बच्चे हमारे साथ जुड़ते हैं। हम उन्हें टॉप यूनिवर्सिटीज में एडमिशन के लिए ट्रेंड करते हैं।''

यह पूछने पर कि आपकी संस्था बच्चों को स्कॉलरशिप कैसे दिलवाती है? शरद बताते हैं कि देशभर के स्टूडेंट्स के लिए एजुकेशन लेवल पर जितनी भी अपॉर्चुनिटी हैं– स्कॉलरशिप, नेशनल–इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन, कॉन्फ्रेंस, वर्कशॉप... हर महीने के पहले रविवार को हम स्कूलों और बच्चों तक पहुंचाते हैं। बच्चों को स्टडी मटेरियल भी देते हैं। शरद डेक्सटेरिटी से जुड़ने वाले बच्चों को अलग–अलग कॉम्पिटिशन के लिए प्रैक्टिस करवाते हैं। वो बताते हैं, इसे ऐसे समझिए कि जब एक गांव का बच्चा पहली बार इंटरनेशनल कॉम्पिटिशन में बैठता है, तो उसे पता नहीं होता है कि निबंध कैसे लिखना है। हम इस तरह की सभी प्रैक्टिस करवाते हैं। हर टॉपिक को 10 से 12 सवालों के साथ सॉल्व करवाते हैं। क्विज करवाते हैं। मैंने भी खुद को ऐसे ही तैयार किया है।

साभार: www.bhaskar.com

लीक से हटकर : बिहार के युवा

भटके युवाओं को राह दिखातीं अनुनीता

''मेरे पिता साहब हरींद्रानंद जी ने इस कालखंड में सर्वप्रथम लोगों को शिव के गुरु स्वरूप से अवगत कराने का कार्य आरंभ किया। मेरे मां–पापा ने मेरे मन मस्तिष्क में यह संकल्प डाला कि सामान्य जनमानस को भी शिव के गुरु स्वरूप से जुड़ने की आवश्यकता है, ताकि मानवता पुष्पित और पल्लवित हो सके और हम सभी शिव गुरु के आश्रय में जाएं और ज्ञान अर्जित करें। श्रृष्टि के सभी कार्य उस परमात्मा द्वारा ही संचालित हैं जिसे जगत गुरु भी कहा गया है।''

ये शब्द हैं अनुनीता आनंद के। शिव परिवार के लोग जिन्हें 'दीदी' के नाम से पूजते हैं। नई ऊर्जा और गतिशीलता से भरपूर अनुनीता उन युवाओं के लिए प्रेरणा का श्रोत हैं, जो कहीं न कहीं अपने मार्ग से भटक गए हैं। सांसारिक चकाचौंध और भौतिक आकर्षण के पीछे भाग रही युवा पीढ़ी को अध्यात्म की रोशनी और शिव के आकर्षण की ओर लौटा लाने को संकल्पित हैं अनुनीता आनंद। अनुनीता बताती हैं, ''मेरी कोशिश जनमानस को महागुरु महादेव के गुरु स्वरूप से अवगत कराने की है। अध्यात्म हमारे आपके जीवन से ही तो उपजता है। मन के किसी कोने में। वैसे भी अध्यात्म तो मन का विज्ञान है।'' वो कहती हैं, ''लोगों के बीच जाने और उनसे रू–ब–रू होना अच्छा लगता है। लोगों के भीतर अथाह दर्द भी है, सूनापन भी और खुशियां भी अपार हैं। उनके दर्द को बांटना अच्छा लगता है।''

पटना के सेंट जोसेफ कॉन्वेन्ट और वीमेंस कॉलेज से पढ़ाई पूरी करने के बाद अनुनीता ने इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ मास कम्यूनिकेशन से पत्रकारिता की पढ़ाई की और फिर कुछ समय के लिए नौकरी भी की। लेकिन कहते हैं न कि

''मन लागो मेरो यार फकीरी में
जो सुख पायो राम भजन में
सो सुख नाहीं अमीरी में''

तो बस इसी ओर अनुनीता ने अपना मन लगा लिया। पिता श्री हरिद्रानंद जी के बताए रास्तों पर चलते हुए आज जनमानस में उनकी एक अलग पहचान बन चुकी है। अनुनीता कहती हैं, ''लोगों को अध्यात्म की तरफ जाने के लिए प्रेरित करना एक मानसिक सुकून देता है। युवा शब्द को अगर उलट दिया जाए तो वायु शब्द बनता है। वायु यानी जिसका अपना प्रवाह है, अपनी गति, अपनी दिशा है। जिस ओर बह चला समीर बन कर तो वसंत है और वहीं बह चला प्रचंड बनकर तो तबाही का मंजर भी वही है। युवा भी तो ऐसे ही होते हैं। मन मस्त मगन। उन्हें बस दिशा देने की जरूरत होती है।''

अध्यात्म का मार्ग युवाओं के लिए सबसे सरल मार्ग है जो उन्हें भटकने से बचाता है और सही दिशा में लेकर बढ़ता है। अनुनीता के शब्दों में ही जानें तो, ''अध्यात्म में युवाओं की सहभागिता भी उतनी ही आवश्यक है जितनी जीवन में। मन के जागने से ही जागृति आयेगी। जब मन जग जायेगा तो जीवन भी झंकृत हो उठेगा। ठीक वैसे ही जैसे क्रांति से वक्त जागता है पर संक्रांति से मनुष्य का मन जागता है, जो उसे सोने नहीं देता। युवा पीढ़ी को एक दिशा चाहिए और सही दिशा गुरु ही दे सकते हैं। शिव से बेहतर गुरु कौन हो सकता है। भारतीय वांग्मय उन्हें जगत गुरु, विश्व गुरु की उपाधि से नवाजे हुए है। ऐसे में जब हमारे पास शिव जैसा महागुरु उपलब्ध है तो कहीं जाने की आवश्यकता नहीं है। शिव ही परमात्मा हैं, शिव ही गुरु हैं।'' कह सकते हैं कि अनुनीता आनंद नई पीढ़ी की नई आवाज बनकर उभरी हैं।

लीक से हटकर : आज के युवा

गिर कर उठना जानती हैं ये युवा पत्रकार

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

खबर लहरिया

लगातार कोशिशों के कामयाब होने का नाम है 'खबर लहरिया'। जब इस अखबार की शुरुआत हुई, उस वक्त इसमें काम करने वाली महिला पत्रकार और रिपोर्टर्स हाथ से खबरों को एक पन्ने पर लिखती थीं। दो पन्नों के इस मासिक अखबार को रिपोर्टर्स पैदल सुदूर ग्रामीण इलाकों में पहुंचाया करती थीं। पाठक बढ़ने पर इसकी छपाई शुरू की गई। धीरे–धीरे यह अखबार चित्रकुट के अलावा यूपी और एमपी में बुंद. `लखंड के अन्य जिलों तक भी पहुंचने लगा।

हर स्तर पर लड़े, हम क्रांति लेकर आए : गीता देवी

'खबर लहरिया' को सबसे खास बनाती है उसकी महिला पत्रकारों की टीम। इस टीम में ग्रामीण पृष्ठभूमि की दलित, आदिवासी और अल्पसंख्यक समुदाय की महिलाएं शामिल हैं। निश्चित तौर पर इस वर्ग की युवा लड़कियों और महिलाओं को निकाल कर लाना आसान नहीं था। 'खबर लहरिया' की वरिष्ठ पत्रकार और उत्तर प्रदेश की ब्यूरो हेड गीता देवी बताती हैं, ''शुरुआत में उन्हें सुदूर गांवों–बस्तियों से निकालकर लाना बेहद चुनौतीपूर्ण था। या तो वे खुद आना नहीं चाहती थीं या फिर उनके घर के लोग उन्हें बाहर निकलने नहीं देना चाहते थे। उसपर से पत्रकारिता पहले ही जोखिम भरा क्षेत्र था। केवल साक्षर मात्र लड़कियों–महिलाओं को सिखाने–समझाने के बाद उन्हें पत्रकारिता का प्रशिक्षण देने के लिए हर स्तर पर लड़ाई लड़नी पड़ी, लेकिन क्रांति तो ऐसे ही आती है और हम लेकर आए। पहले जहां एक भी लड़की या महिला हमारे साथ आने के लिए आसानी से तैयार नहीं होती थीं, वहीं आज 100 में 30 लड़कियां–महिलाएं खुद ही इस क्रांति में शामिल होने के लिए चल पड़ती हैं।'' गीता जी बताती हैं कि जब हमने गांवों से लड़कियों को पत्रकार के तौर पर आगे लाना शुरू किया तो, पहले तो किसी ने उनपर ध्यान ही नहीं दिया। लोग सोचते थे कि महिलाएं रिपोर्टिंग कर ही नहीं सकती हैं। लेकिन जब हम बार–बार उन जगहों पर पहुंचने लगे, सवाल उठाने लगे, तो हमें नजरअंदाज करना उनके लिए मुश्किल होने लगा। हमारा मकसद ही था चंबल के उन इलाकों की खबरों को निकालना जहां तक मुख्यधारा की मीडिया नहीं पहुंच पाती थी। खासकर महिलाओं से जुड़ी खबरें।

'खबर लहरिया' ने चुनौतियों से लड़ना सिखाया : सुमन दिवाकर

पटना में 'खबर लहरिया' की पत्रकार सुमन दिवाकर इस अखबार की नई पीढ़ी की पत्रकार हैं जो साहस और निर्भीकता की परंपरा को अपने साथ लेकर चल रही हैं। मूल रूप से उत्तर प्रदेश की सुमन अपने प्रदेश से बाहर रहकर हर क्षेत्र की खबरों को सामने रखती हैं। बताती हैं, ''चुनौतियां तो बहुत हैं। नई जगह पर नए लोगों के साथ काम करना कठिन है, लेकिन चंबल अकादमी में प्रशिक्षण के दौरान हमें इन चुनौतियों से लड़ना सिखाया जाता है।'' सुमन कहती हैं कि बिहार के लोग हुनरमंद हैं और सहयोग करते हैं। हालांकि कई बार वे उग्र हो जाते हैं लेकिन अगर उनके साथ शांत रहकर बातचीत की जाए तो फिर वे भी शांत हो जाते हैं। चंबल अकादमी चंबल मीडिया का एक अंग है जो सुदूर प्रदेश से आने वाली महिला पत्रकारों के लिए सब कुछ है। यहां मिले प्रशिक्षण से लड़कियां रिपोर्टिंग के दौरान आने वाली कठिनाइयों के बारे में पहले ही सतर्क हो जाती हैं।

लड़कियों को अति विश्वास से बचना होगा

गीता जी कहती हैं कि आज की पीढ़ी एक नई ऊर्जा और आकांक्षा के साथ आगे बढ़ रही है। हमने गांवों में हो रहे बदलाव को अनुभव किया है। लेकिन एक बात जो अभी भी चिंतित करती है वह है लड़कियों का अति भावुक होना और किसी पर भी विश्वास कर लेना। खासकर वे लड़कियां जो गांवों से आकर शहरों में पढ़ाई या नौकरी करती हैं, वे बहुत जल्दी विश्वासघात का शिकार हो जाती हैं। लड़कियों को यह बात समझनी होगी।

ऐप एक काम अनेक
पटना शहर को साफ स्वच्छ बनाने के लिए
'क्लीन पटना ऐप' डाऊनलोड करें
GET IT ON Google Play
Clean Patna App डाऊनलोड करे
CITIZEN GRIEVANCE APP
Welcome to Patna Smart City
Raise Complaint
Complaint Status
Track Vehicles
View Bills
Toll Free
Near Me
Responsible Person
Sos
अपनी शिकायत का स्टेटस जानें
शिकायत दर्ज करें
गाड़ी को ट्रैक करें
बिल देखें
हेल्पलाइन नंबर
155304
स्वच्छ पटना शहर अपना
कुछ हम करें, कुछ आप करें
पटना नगरपालिका
CITY OF PATNA
पटना नगर निगम द्वारा जनहित में जारी

अपने शहर को रखें साफ
पटना नगरपालिका
CITY OF PATNA
हेल्पलाइन नंबर 155304
पटना नगर निगम द्वारा जनहित में जारी
SWACHH SURVEKSHAN 2022
कुछ हम करें, कुछ आप करें
स्वच्छ पटना शहर अपना

लीक से हटकर : बिहार के युवा

फेल होने से जिंदगी का सफर नहीं रुकता

''परीक्षा या शादी में फेल हो जाना जिंदगी का खत्म हो जाना नहीं है। आगे बढ़िए, खुला आसमान आपका इंतजार कर रहा है।'' ये कहना है तबस्सुम अली का। तबस्सुम नाम है हौसले और भरोसे का। अपने आप पर भरोसा रखना और किसी भी हाल में अपनी हिम्मत नहीं खोना तबस्सुम की खासियत है।

बिहार के जमुई में महिलाओं के अधिकारों के लिए काम कर रही तबस्सुम 'मेक अ न्यू लाइफ फाउंडेशन' नामक संस्था चलाती हैं। उनकी संस्था महिलाओं को उनकी समस्याओं के लिए कानूनी सलाह और समाधान प्रदान करती है। हालांकि उनकी इच्छा बच्चों के लिए संरक्षण केंद्र चलाने की थी लेकिन फंड की कमी के कारण ऐसा नहीं हो पाया है। तबस्सुम बताती हैं, ''सरकार की ओर से चलाए जा रहे खुला आश्रय के लिए काम करते हुए मुझे ये महसूस हुआ कि किसी भटके हुए बच्चे को सही राह पर लाने के लिए केवल कुछ दिनों की काउंसिलिंग काफी नहीं है बल्कि उन्हें तब तक संरक्षण दिए जाने की जरूरत है तब तक कि वो अपने पैरों पर खड़े न हो जाएं। बच्चों को लेकर यही सोच मुझे समाज सेवा के क्षेत्र में लेकर आ गई।'' इतना ही नहीं तबस्सुम ने एवरेस्ट तक पहुंचने वालों के सपनों को पूरा करने के लिए फंड की व्यवस्था करने के मकसद से 2017 में साइकिल से पूरे भारत की यात्रा की। इस दौरान रास्ते में आने वाले हर स्कूल और कॉलेज में गईं और बच्चों को अपनी चुनौतीपूर्ण यात्रा के बारे में बताया। बकौल तबस्सुम उस समय उनकी उम्र 37 साल की थी और उन्होंने बच्चों को अपना उदाहरण देते हुए बताया कि अगर आप कुछ करना चाहें तो उम्र कभी बाधा नहीं बनती है। इसके बाद 2019 में उन्होंने अकेले बाइक से पूरे देश की यात्रा करने की ठानी। वो चाहती थीं कि दुनिया एकल महिला की शक्ति को पहचाने। हालांकि 5 राज्यों का सफर करने के बाद एक दुर्घटना में जख्मी हो जाने के कारण उन्हें अपना यह सफर रोकना पड़ा लेकिन उनका इरादा जल्दी ही फिर एक नए सफर पर निकलने का है।

तबस्सुम अली

एक छोटे से शहर झाझा में पली–बढ़ी तबस्सुम के सामने भी वही बाधाएं थीं जो आम तौर पर एक छोटे शहर की मध्यमवर्गीय लड़की के सामने होती हैं। पढ़ाई–लिखाई में रोक–टोक, पहनने–चलने में रोक–टोक! फिर भी तबस्सुम दसवीं कक्षा में पहुंचीं लेकिन घरवालों की तरफ से उन्हें मैट्रिक की परीक्षा नहीं देने दी गई। तबस्सुम उदास तो हुईं लेकिन हिम्मत नहीं हारी और अगले साल फिर परीक्षा में बैठीं, मगर तैयारी पूरी नहीं होने की वजह से वे परीक्षा में फेल हो गईं। वो फिर भी नहीं हारीं और

अगले साल तीसरी बार परीक्षा में बैठीं और प्रथम श्रेणी से पास हुईं। तबस्सुम कहती हैं कि अगर वो भी दूसरे बच्चों की तरह अपना हौसला हार गई होतीं तो आज समाज के लिए काम नहीं कर रही होतीं। इसलिए आज की युवा पीढ़ी से कहती हैं कि परीक्षा में फेल हो जाने से जिंदगी खत्म नहीं हो जाती है, आगे बढ़ते रहना है।

आज तबस्सुम अली आत्मविश्वास से लबरेज हैं लेकिन हमेशा से ऐसा नहीं था। एक वक्त ऐसा भी आया उनकी जिंदगी में जब अपनी मर्जी से शादी करने के लिए वे घर से भागकर दिल्ली चली गईं। लेकिन वहां जाने पर धीरे–धीरे उन्हें पता लगा कि उनके साथ धोखा किया गया है। साथ रहना मुश्किल होने लगा। उनके पति को उनके अंदर कमियां नजर आने लगीं। तबस्सुम कहती हैं, ''शादी चाहे लव मैरेज हो या अरेंज, अगर आपका पार्टनर आपसे खुश नहीं है या चीजें सही नहीं हो रही हैं तो रिश्तों को ढोना मजबूरी नहीं होनी चाहिए।'' सात साल साथ रहने के बाद वे शादीशुदा जिंदगी से निकल गईं और समाज सेवा का रास्ता अपना लिया। कहती हैं कि जिंदगी का सफर ऐसा ही है, कभी तेज, कभी धीरे तो कभी रुक जाना। ऐसे ही चलते–चलते एक दिन अपनी मंजिल तक पहुंच जाएंगे हम।

बिहार सरकार

कला, संस्कृति एवं
युवा विभाग, बिहार

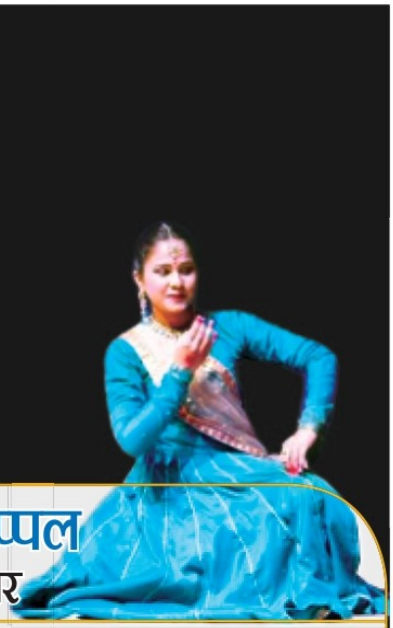

पद्मश्री पंडित हरि उप्पल
की जयंती के अवसर पर
शास्त्रीय नृत्य महोत्सव
(22-23 सितंबर 2023)

पद्मश्री पंडित हरि उप्पल की जयंती के अवसर पर शास्त्रीय नृत्य महोत्सव का उद्घाटन करते कला-संस्कृति एवं युवा विभाग मंत्री श्री जितेन्द्र कुमार राय, विभागीय अपर मुख्य सचिव श्रीमती हरजोत कौर बम्हरा, अपर सचिव श्री दीपक आनंद एवं पशु एवं मत्स्य विभाग के प्रधान सचिव डॉ एन विजया लक्ष्मी।

कला, संस्कृति एवं युवा विभाग की विभागीय अपर मुख्य सचिव, श्रीमती हरजोत कौर बम्हरा के साथ पद्मश्री गीता चंद्रन के भरतनाट्यम और इंस्टीट्यूट ऑफ मणिपुरी परफॉर्मिंग आर्ट्स की टीम।

डॉ एन विजया लक्ष्मी, (आईएएस) द्वारा गणेश वंदना के साथ कार्यक्रम की शुरूआत।

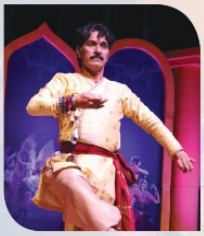

शास्त्रीय नृत्य महोत्सव में श्री राजेंद्र गंगानी अपनी प्रस्तुति देते हुए।

प्रस्तुति देते कलाकार।

कथक प्रस्तुति में आदि शक्ति माँ दुर्गा के अलग - अलग रूपों को दर्शाते हुए कलाकार।

बिहार सरकार

महिला एवं बाल विकास निगम, बिहार
समाज कल्याण विभाग

Centre for Catalyzing Change

कार्यस्थल पर आंतरिक समिति एवं जिला स्तर पर स्थानीय समिति है जरूरी

प्रत्येक कार्यस्थल पर एक समिति गठित करना आवश्यक है ।

अगर संगठन में कोई महिला नहीं है तो ?

वहाँ समिति का गठन हेतु अन्य कार्यालयों अथवा कार्यस्थल की प्रशासनिक इकाईयों से पीठासीन अधिकारी मनोनीत किया जायेगा। यदि कार्यस्थल के अन्य कार्यालयों या प्रशासनिक इकाइयों में वरिष्ठ स्तर की महिला कर्मचारी नहीं है, तो पीठासीन अधिकारी को उसी नियोक्ता के अन्य विभाग या संस्था या किसी अन्य कार्यस्थल से नामित किया जाएगा।

आंतरिक समिति (आईसी)

प्रत्येक संगठन/विभाग को कम से कम पांच सदस्यों वाली एक आंतरिक समिति (आईसी) का गठन करना अनिवार्य है| इस समिति की अध्यक्ष संगठन/विभाग में वरिष्ठ स्तर पर कार्यरत महिला होगी। इस समिति के आधे सदस्य महिलायें होगीं और एक बाहरी सदस्य होंगे किसी एनजीओ से विशेषकर जो महिलाओं के मुद्दों/ या उनकी बेहतरी के लिए कार्य करते हो या जिनके पास सामाजिक कार्य का अनुभव हो या कानूनी ज्ञान हो ।

स्थानीय समिति (एलसी)

राज्य सरकार हर जिले में जिलाधिकारी/ अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट/कलेक्टर/ डिप्टी कलेक्टर को जिला अधिकारी के रुप में अधिसूचित करेगी, जो एक स्थानीय समिति (एलसी) का गठन करेंगे ताकि असंगठित क्षेत्र या छोटे प्रतिष्ठानों में महिलाओं को एक यौन उत्पीड़न से मुक्त वातावरण में काम करने का अवसर मिल सके।

किसी विशेष जिले में एलसी का पता लगाने के लिए

- जिला पदाधिकारी कार्यालय से सम्पर्क करें
- अपने जिले/राज्य में कार्यरत वन स्टॉप सेंटर/महिला हेल्पलाइन (181, 100 आदि के माध्यम से टोल फ्री) से संपर्क करें
- राज्य महिला आयोग से संपर्क करें
- राज्य के महिला एवं बाल विकास विभाग/महिलाओं के मुद्दों की देखभाल करने वाले विभाग से संपर्क करें

संगठन/जिले में आईसी/ एलसी का गठन न करने पर रु. 50,000/- जुर्माने का दंड है

बार-बार समिति का गठन नहीं करके नियम का उल्लंघन करने वालों को व्यावसायिक गतिविधियों को करने के लिए आवश्यक लाइसेंस/पंजीकरण को रद्द करके /वापस लेकर दंडित किया जाएगा।

बराबरी और सम्मान,

हो हर कार्यस्थल की पहचान

www.emanjari.com

मंजरी

स्त्री के मन की

बिहार
असीम अवसरों का प्रदेश

भूमि आवंटन की प्रक्रिया

बिहार औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकरण (BIADA) उद्यमियों को लीज के आधार पर औद्योगिक इकाई स्थापित करने के लिए भूमि प्रदान करता है।

यदि सभी आवश्यक कागजात ठीक हैं तो भूमि आवंटन प्रक्रिया अत्यंत सरल है। प्रोजेक्ट क्लीयरेंस कमेटी (पीसीसी) की साप्ताहिक बैठक होने के कारण आवेदक के आवेदन पर निर्णय त्वरित आधार पर की जाती है।

- आवेदक को BIADA की वेबसाइट पर भूमि/शेड के लिए आवेदन करना होगा। आवेदक द्वारा वेबसाइट पर पूर्ण विवरण और दस्तावेज अपलोड करना होगा।
- आवेदक द्वारा प्रस्तावित परियोजना के संबंध में BIADA द्वारा यदि कोई प्रश्न उठाए गए हैं तो उत्तर देना होगा और दस्तावेज़ प्रस्तुत करना होगा।
- प्रोजेक्ट क्लीयरेंस कमेटी (पीसीसी) की बैठक में आवेदक के आवेदन पर चर्चा तथा अंतिम अनुशंसा
- पीसीसी की संस्तुति के बाद बियाडा भूमि आवंटन पत्र जारी करेगा जो कि आवेदक को ई-मेल किया जाएगा
- आवेदक को आवंटन पत्र में वर्णित विवरण के अनुसार ऑनलाइन भुगतान करना होगा
- आवेदक द्वारा भुगतान के उपरान्त संबंधित क्लस्टर डीजीएम के समन्वय से भूमि का वास्तविक कब्जा लेना होगा
- आवेदक द्वारा अपने औद्योगिक इकाई की आवश्यक स्वीकृति और अनुमोदन के लिए सिंगल विंडो सिस्टम पोर्टल पर आवेदन

https://swcz.bihar.gov.in

आप हमें ई–मेल करें

आप हमें अपने लेख और पत्र ई–मेल भी कर सकते हैं। इस विषय में विशेष जानकारी equityasia@gmail.com पर ली जा सकती है। प्रकाशक की अनुमति के बिना पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री का अन्यत्र इस्तेमाल करना कॉपीराइट का उल्लंघन माना जाएगा।

RNI Title Code: BIHBIL02442

© इक्विटी फाउंडेशन